संवेदना

प्रेम रंजन

BlueRoseONE
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Prem Ranjan 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-071-0

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: January 2026

अनुक्रमणिको

1.	वर्ग में बच्चे सभी	1
2.	हृदय की हिलोरें	3
3.	मीरा के आने से	5
4.	थाम लो कदम	6
5.	एक टुटे पके बाल	8
6.	मैं महकता फुल	9
7.	जो राम सत्य ही आएँगे	10
8.	माँ तु तो माँ है	13
9.	जनतंत्र के प्रतिहार	15
10.	बहुत जरूरी है महिला को	21
11.	जब भी विश्वास सहम जाता है	26
12.	मुझे आज भी अपने हिस्से का चाँद दिख जाता है।	27
13.	जब तक कर सको	29
14.	गया मैं भी शादी....	31
15.	ध्वनियंत्र तुम तेज	33
16.	पिले पत्तों का झड़ना	34
17.	शिक्षा दीक्षा	35
18.	कितनी इच्छा और अभिलाषा	36
19.	वीरू कर बेटा	37
20.	वृक्ष के असंख्य पत्तों को	40
21.	जन्म से रिस्ते	42
22.	पियुष तुम अमृत	43
23.	मुख्य शहर के बीचो बीच (खिलौने खाली)	44
24.	मित्रता वह प्रीत है	46
25.	कुछ कहना है आगे	48
26.	पैमाना जितना पीता है	49
27.	तेरी गली से गुजर कर	51
28.	फिर से रूक जा, जरा धीरे धीरे	52
29.	परतंत्र था ये देश...	54
30.	उतार लिए झण्डे....	61
31.	दिनानाथ की मृत्यु	62

32. थोड़ा और मधुर कर दो 64
33. जाती नही है दिल से 67
34. वसुधा ने बीज धरे 68
35. सागर से उठती लहरें 70
36. जींदगी बड़ी जीवंत शब्द है 71
37. हाँ बदल देनी चाहिए इतिहास 72
38. अभी धूप निकली थी 76
39. राह–ए जिंदगी... 77
40. खुश्बु जो मेरे साथ है 78
41. अब तो साजन के आने में.. 80
42. ज्योति तुमने क्या किया 83
43. मित्रता 85
44. एक ऐसी गजल दे मुझको 87
45. बरसात का मौसम है........ 89
46. चंद्रयान–ррр दक्षिण ध्रुव 90
47. तृप्ति की अभिलाषा 95
48. समय की चार दीवारी में 96
49. मैं शब्द बेचता हूँ। 97
50. अपनों के दिए आँसू 99
51. जो तुम कह रहे 100
52. इश्वर तुम करूणा के सागर 101
53. बचालो मइया, अपने हिंदुस्तान को 104
54. बालक वो बड़ा प्रवीण 106
55. एक पंक्ति अर्थपूर्ण. 107
56. तेरे संग जीवन जीने की 108
57. कंचों को समझ हीरा 109
58. शिक्षा विश्वास की जननी 112
59. सौ बार प्रयास निरंतर से 114
60. सुंदर सी कली जब भी 115
61. यौवन प्रिया, मृगमयी चपला 117
62. राखी बड़ा ही प्यारा त्योहार 119
63. गाँधी की वाणी कहती है 121
64. देखो आँसू ढलक रहे 122
65. भारत क्यों तपता है 123
66. डरना नहीं 129

67. प्रभारी भी अजीब जीव होते हैं 132
68. देखो, पागल गीत गा रहा 134
69. सुनो, हे अर्जुन 136
70. न लिख सके, मेरे गीत 137
71. इंसान के चरित्र–इमान की 138
72. उन मुर्तियों को देखो... 139
73. जब भी थक कर 140
74. घर बताता है कि........ 141
75. दिए जल गए 143
76. ऐ बसंती हवा 145
77. हमने सुना है– 148
78. आज तलक कविता को में 149
79. तुम सुनकर सम्मान लेना 151
80. एक जाने कैसी आग 152
81. चलो एक बार गुलशन को 154
82. कुछ शब्दों में कह जाने से 156
83. कुछ मतलबी से लोग 157
84. माँ तो अब भी अपने 158
85. बिक जाते समाजी नेता 159
86. आग लगे उस देश के 162
87. रोज सुबह फिर एक बार 164
88. भक्ति के दो पंथ 166
89. एक पत्थर फिर उठा लूँ 167
90. पिता का मरहमी अंदाज 168
91. एक किस्सा फिर बना 169
92. सकल गुणों का खान 170
93. तस्वीर बनाने वाले ने 173
94. सावन के गीत 174
95. यश मान सम्मान 176
96. कहे क्या वेद के ज्ञानी 178
97. यदि प्रथम पुज्य धरती माता 180
98. ऐ रिश्तेदार 181
99. शिक्षा दीक्षा ज्ञान–चेतना 183
100. खुदा के दरबार में 184
101. देख ली दुनियाँ 186

102. इधर कुछ दिनों से 188
103. बड़ी बोझ से चलता जीवन 189
104. मेरा जग मरेगा 190
105. जन्मदिन मुबारक हो 191
106. मैं समझता हूँ 192
107. भारत है एक देश 194

1. वर्ग में बच्चे सभी

गणवेश में सब एक जैसे
कौतुक कौलाहल से भरा
विश्वास से आपूरित
लथ पथ वीरता से
ना झुकेंगे, यह सभी
सब लोग कहते
वर्ग में बच्चे सभी
हैं सृष्टि रचना मे लगे
हर बीज सृजन के लगाते
निदाध थे कुछ शुन्य थे
कुछ मध्य मंथर मंद थे
हम ना रुकेंगे, यह सभी
सब लोग कहते।
वर्ग में बच्चे सभी, एक पिछे अंत के
कोने में बैठा
गुन गुनाता, मुस्कुराता
खुद सफल, ललकारता
वह वीर था, यह सभी
सब लोग कहते।
मैं जुटाकर चुन लिया
साहस, तो पुछा
क्यों रहा, अलमस्त
सबसे क्यों अलग
सब लिख रहे,
तुम क्या अकेले पढ़ रहे हो।
झेंपता और मिचता

उठ खड़ा वह बोलता
कुछ भी नहीं, बस
आँख खोले देखता
और सिर झुकाकर है खड़ा
है सयाना, यह सभी
सब लोग कहते।
पुछने पर अश्रु लेकर
पास आया, बोलता
कुछ भी नहीं आता मुझे
मैं ईंट गिनना जानता हूँ
सैंकड़ों ईंटे खड़ी कर
गिनता हूँ, होड़ में
भठ्ठे लगाना जानता हुँ।
हाय हृदय की वेदना
संवेदना बनकर खड़ी
प्रश्नांकित, प्रज्वलित हुई
मेरी व्यथा, क्यों पुछता
था बालश्रम, पर वीर था
यह सभी सब लोग कहते।
वर्ग में बच्चे सभी
गणवेश में सब
एक जैसे
यह समझ आगे बढ़ा
पढ़ता रहा
मै चल पड़ा
जिंदगी की एक सबक
लेकर बढ़ा।

2. हृदय की हिलोरें

विश्व–वीणा की अमर तान
अनंत की मधुर वेदना,
निशा का नीरव गान,
प्रेम माधुर्य का रसपान
साहित्य की कुटिया।
मूक वेदना
क्षुधित प्राणी
मीरा तुम
मोहन मतवाली
श्याम दिवानी
नूतन वंदन
विश्व वीणा की
अमर नंदिनी
कालकुट ग्राहिणी
तुमको प्रेम प्रणाम।
मीरा तुम
जगत मोहिनी
सुनीत वसुधा
नित्य मंगला
शिव की प्यारी
प्रथम प्रेयसी
वात्सल्य वाहिनी
तुमको प्रेम प्रणाम।
मीरा तुम
कुंठित जन की
प्राण वाटिका

निश्छल हृदय
परमाण धारिका
अतुल प्रिया
मीरा तुम शीतलता
की चरण मृतिका
तुमको प्रेम प्रणाम्।
भेंट हृदय का
पुष्प गुच्छ
अनुपमा तुम
वर्ण प्रिया
करता जग वंदन
नर का नरेश
तुम शुष्क हृदय की
रक्त संचालिका
तुमको प्रेम प्रणाम,।
मैं दीन हीन
मेरी दशा क्षीण
मैं करुँ याचना
कोटि तीन
तुमको हो अर्पित
मान मेरा
नव निधि अरु
अष्ट सिद्धि से
हो संचित बल सम्मान
तुमको बारंबार प्रणाम, तुमको प्रेम प्रणाम।

3. मीरा के आने से

घर आँगन महका है
जो मीर प्रथम होता
तो मीरा भी प्रथमा है।
वो शस्य श्यामला है
वो नारी सबला है
अरमान नहीं तुझको
नर मे नरेश जो हो।
तु चाह नहीं रखती
वो गो पालक ही हो
हाँ सच्चे ईश्वर की भी
कोई चाह नहीं तुमको
तुम सबसे सुंदर हो
सजीव गगन तल में।।
नारी में सीता हो
पुस्तक में गीता हो
सीता और गीता में
तुम भेद नहीं करती
सीता भी सच्ची है
गीता भी न्यायी है
तुम संबल नारी हो
जग लोहा माने है
ना झुकना सीखा है
हमें गर्व तुम्हीं से है।
हाँ, तुम्हें मुबारक हो
ये नव जीवन तेरा
हो चंद्र, शिखर तेरे
तु नित्य नवीनतम हो।

4. थाम लो कदम

घर में रुको
कब तक चलेगा
देश का पहिया भला।
हाँ देश का पहिया
जो खींचता है आदमी
नंगे पाँव, नंगा जो बदन
क्यों कर बढ़ेगा, और चलेगा
देश का पहिया भला।
बंद कर दो यान, वायुयान
मुमकीन है मगर
पाँव नंगे ना चलें
और थम गए तो
किस तरह कब तक चलेगा
देश का पहिया भला।
वायु–जहर से है भरा
प्राण घातक है बना
पर, प्राण वायु रोक दो
क्यों कर चलेंगी जिंदगी
कैसे चलेगा
देश का पहिया भला।
प्राणवायु सबल संबल है नहीं
वो क्षीण है, अंत्यज निर्बला है वही
वायु में शामिल विष अणु
प्राण घाती विष अणु
विज्ञान पिछे हट गया
सम्मान है दुबका पड़ा

मानवों के कृत्यों का
प्रश्न लेकर है खड़ा।
बंद दरवाजों के पिछे
कब तलक बच पाओगे
सुक्ष्मजीवी विष वमन से
अब नहीं छुप पाओगे।
जल तरंगो से बना
वायु तरंगो से चला
वह जीव घाती जीव है
अन्य जीवों से पृथक यह जीव है।
उम्र की पहचान है
ना देश का अभिज्ञान है
पर चला उन्मुक्त होकर
विश्व का संहार है
ना कोई औजार है, और
ना कोई हथियार है,
ले चला निजबल, सबल वह
दृष्टि से अवरुद्ध है,
चक्षु उसका द्वार है
नासिका और वर्ण उसका द्वार है
हृदय बुभुक्षा है उसे
करता अंतरंग पान वह
ना रुकेगा दृष्टि दानव
संतुलित करने को मानव
प्रकृति और देवता से
है मिला वरदान है।

5. एक टुटे पके बाल

वृक्ष से टुटे हुए
पत्ते के माफिक
जिन्दगी के ऋणातमकता
का नया संदेश देता,
सृजन का जो बीज
पल्लव दे रहा है
पुष्प से शोभित रहा
फिर सुखती टहनी
सिकुड़ती पत्तियाँ
जिन्दगी के ऋणात्मकता
का नया संदेश देता।
गीत गाता है मल्हारी
उठते गिरते स्वरों
को संग लेकर
अंतरिक्ष को गुंजायमान करता
फिर ठहरता, अवतान देता
शेषता को प्राप्त करता
जिन्दगी के ऋणात्मकता
का नया संदेश देता।
अति अनुभव, लंबी आयु
प्राप्त हो, महत्व का सुरताल हो
फिर से कहानी बोलता
कई बात दुहराता हुआ
फिर सिखने की छंद को
विराम देता, अस्त होती है कहानी
जिंदगी के ऋणात्मकता
का नया संदेश देता।

6. मैं महकता फुल

सुगन्धी पुष्टि करता
वन नहीं उपवन में रहता
ज्ञान कम, अभिमान ज्यादा
मुक्ति कम, पैमान ज्यादा।
क्या पता कैसे कहुँ
कि जंगलों में भी कई
फुलों की बगिया
आसमान के खुलेपन में
झुमते और खेलते हैं
मैं महकता फुल, सुगन्धी पुष्टि करता
ना है उसको शौक
गमले में गड़ाने की
न उसको नल से पानी
प्राप्त करने की तमन्ना है।
पीता है वो बहता जल
स्वच्छंद होकर प्राण वायु
प्राप्त करता
प्रतियोगिता है ना किसी से
सबके साथ महकना ही
हमारी रीत है।
मैं महकता फुल
सुगन्धी पुष्टि करता।

7. जो राम सत्य ही आएँगे

तो, वंदन, चंदन, पूजन, अर्पण
हम भी अपने मन से शक्ति तक
श्रीराम के चरण पखारेंगे।
और राम सरित के सलिल अंबु में
मुक्ति धाम की अभिलाषा में
बारंबार नहा लेंगे।
वो अवध का राम,
पिता की खातिर जिसने
तज डाला सिंहासन था
माता प्रार्थी बन खड़ी रही
वो पुत्र राम कहलाया था,
राम जो केवल नाम नहीं
वो अपने युग की महिमा धारा
वसुधा धन्य कर
राम बना, वो संकट मोचन
का मालिक
एक हनुमान बना डाला
एक लक्ष्मण का निर्माण किया
वो सुमित्रा का नंदन था
और स्वयं कौशल्या का नंदन था
एक सिता माता बना डाला।
चित्रकूट में माँ कैकयी के
चरण आँखों के आंसू से धोए
भरत को सौंपा सिंहासन
अग्नि पथ पर बढ़कर आगे
भीक्षा के पथ को वरण किया।

क्या वही राम फिर आएँगे
जो सबरी को माता कहता
अहिल्या का हितकारी हो
दुर्भिक्ष बालि का बेधक हो
आशा जगी है सबरी माता
के पुत्रों को हाँ कोल भील
के पुत्रों को, जंगल में
रहने वालों को,
क्या राम वही फिर आएँगे
हाँ मैला ढोने वालों को
अत्याचार सहन करने वालों को
सब सपने नए नयन लेकर
सब राम राम दुहराते हैं।
क्या राम वही फिर आएँगे
वो मंदिर का प्रभु नहीं
जन मानस का हितकारी
मंदिर में गर राम बसे
तो दलित का दर्शन कब होगा।
जो राम दलित कृपालु है
क्या राम वही फिर आएँगे।
राम की कृपा
चंदा की किरण की जैसी लिखी
वो करुणा के सिन्धु सागर है
आशा–तृष्णा बढ़ और चली
क्या वही राम फिर आएँगे
जो सबकी सुनता
सबके खातिर सुनता
सबके खातिर सब कुछ करता जाता है
युग त्रेता था द्वापर से
पहले, अब तो कलि
का काल गरल है
फिर भी क्या राम

अपने रुप में
सिया सहित चल आएँगे।
वो कण व्यापी
वो घट वासी
वो नर सिंधु
जग का बंधु
वो दिन दयाला
परम् कृपाला
संतन का हितकारी था
क्या वही वही और
वही राम फिर आएँगे।
जो राम सत्य ही आएँगे
तो वंदन चंदन पुजन अर्पण
हम भी अपने मन से शक्ति तक
श्री राम को चरण पखारेंगे।

8. माँ तु तो माँ है

तेरी सत्ता ईश्वर की सत्ता
तु ही बीज तु है सृजन
निराकार को साकार करती
धरती पर मानव के वृक्ष
लगाती माता तु जग जननी है।
तेरे बच्चे ने तुझे माता
बना दिया, तुम माँ हो गई
पता नहीं इसमें कितनी इच्छा
तेरी थी, कितनी पिता की
कामेच्छा थी, पर सहन वेदना
प्रसव वेदना, अंतिम तक तेरी थी
इसलिए तु माँ है और तेरी
सत्ता अधिष्ठापित है।
द्रौपदी जो कृष्णा थी
अनुजा कृष्ण की
निज हित साधक
जग कुल घातक
सिद्ध हुई।
तो कहना है
भावार्थ यही, कि पुत्र पुत्र
होना, उचित पर
माता को भी देवी
होना पड़ता है
कुल, वंश, जाति
सम्पदा, देश, भूमि,
उचितनाचित, सब त्याग

समर्पित, माता को बस
माता होना पड़ता है।
वसुदेव के संग कारा में रही
देवकी, तभी कृष्ण को पाया था
था कंस भाई, राजा नरेश
पर लोकहीत, कल्याण के
खातिर पुत्र पक्षधर
माता, माता की ममता है
अजर अमर
वो गोपाला कान्हा प्यारा
माँ यशोदा के घर पला बढ़ा
कान्हा का समर्पित गोकुल था
मनुजों में वह बाल रुप
और सकल विश्व का स्वामी था।
माँ की ममता सबसे उपर
बस माँ का हीतकारी था।

9. जनतंत्र के प्रतिहार

जनता के जो सेवक
स्वच्छ सत्य का प्रतिक
जय जय जय बलिहारी
छवि सेवकाई हो प्रारंभ से
छविमानता का नित्य हो उत्थान
उत्कर्ष होकर श्रेष्ठता को प्राप्य है
परन्तु क्या हृदय में
दुःशासन पनप जाता है।
प्रतिनिधि स्वीकार्य है
किन्तु विडंबना देखो
जो पिड़ित के दर्द से
अकुलाता था,
रात जागता था
निष्काम लगता था।
छवि में भारीपन आना
हृदय उद्वेग में
धनाडंबर, सत्तागर्व
शीर्ष प्राप्य होने के बाद
अनमेल विकृतियाँ आती हैं।
श्वेत वसन में
दरिदों का विश्वास
घुटता है,
जो आस लगाई थी
वो विश्वास जलता है।
तुम क्यों नहीं दोगे उनका हक
या कि विवश हो तुम

उनकी बात पटल पर
रख नहीं पाते हो।
क्यों ?
क्योंकि भयाक्रांत हो तुम
कुनिति से बने कुचक्र से
जिनका नामकरण
विचार कर
राजनीति रह गई हो।
तुम जो भी हो
गृह, शिक्षा, जल
या संचार का प्रभार
मिला हो तुम्हें
पर तुम वही हो
जो, तहसील कार्यालय में झुनुआ बुआ की लड़ाई
लड़ी थी।
फागु की मौत पर
सरकारी तंत्र की विकृति
के विरुद्ध
समस्त गाँव के साथ
सत्ता तक कम्पित कर दिया था।
इसी विरता का
पुरस्कार दिया था
जनता के हृदय ने
वो कौन सा पानी पीलिया
जिसने तुम्हारे संस्कार
नष्ट किये।
धनार्थ नहीं थे तुम
सेवार्थ प्राप्य था
सहयोग था,
विश्वास था टुटा है
एक रात नींद
उचटने के बाद

स्मरण किया तुझे
तेरा लिबास श्वेत है
था तु
भ्रमित होकर
पुछता है।
स्वप्न में भी तुझे देखा
तेरे आगे पिछे
सुरक्षा प्रहरी की फौज
क्या एक दो लोग
तेरी रक्षा नहीं कर सकते,
तु भयभीत है
कुकृत्य से,
ठीक है, गरीब जनता डर गयी
पर, तुझे तु खुद
से बचा नहीं सकते
मदान्धता के बाद
तेरी निद्रा भंग होगी
और तु धरती पर
फिर गिरेगा।
भुखंड की आधी
संपत्ति तेरे पास
क्यों कर चली आती
तेरे पास तो फटे जूते थे
ये बी.एम.डब्लयू. कहाँ से आयी।
कोई नहीं पुछता
छटपटाता, पछताता मन
हृदय चित्कार करता
बच्चों के दुध को
माता बिलखती
बच्चे भुख से लड़ते
किशोर शिक्षा को तरसते
युवा रोजगार को भटकते

60–60 वर्ष तक
सरकार को सेवा देकर
वृद्धावस्था में कर्मचारी
वृद्धा भत्ता की क्रांति करते
किसान अनकहे ढंग से
पेड़ों पर रस्सी से
लटकते।
व्यवसायी कर देकर भी
कराहते।
कौन सी व्यवस्था है
जिसे देश कहे,
और विकास की आस बढ़े।
स्वतंत्र देश है
देशवासी गुलाम है
ऐसी व्यवस्था का
जो वृहत अन्तर
बनाते।
शिक्षा, दवाई, मिठाई
भोजन और पानी
सब के स्तर है
अलग अलग।
जीवन के इतने अनुभाग
क्यों है ?
क्या इसलिए ही
अधनंगा फकीर
अंग्रेजों से लड़ता था।
शर्म करो, डुब मरो,
जो चाहो जैसे चाहो
करो, पर लज्जा है,
तो अब भी कुछ करो।
जिस देश की पावन मिट्टी की
कसमें खाते हो

कहाँ है उद्धृत की
अबला का हो
चिरहरण
नए शब्द बनाते हो
बलात्कार कहते हो
राजनीतिक शब्द पर
खींचातानी करते हो
बेटियों के मांस नोचकर
पशु मनुष्य, महान बनते हो
परिधान, धारण करते हो
कुकृत्य करते हैं,
धिक्कार हो
जो, रंगों का भी
अपमान करते हो।
रंग तो प्रतीक है
मानवीय गुण धर्मों का
उनसे भी खिलवाड़ करते हो।
क्या इसीलिए
बुढ़ी माँ ने भी
शिर्ष चुनकर वोट दिया।
आँखें अंधी थी,
पर नवासे के
संग जाकर तेरे नसीब में
थरथराती अँगुलियों से
बटन दबाया,
क्योंकि, तुने माँगा था,
बटन दबाकर, आशीर्वाद दे,
आपका बेटा हुँ।
लज्जा के कण अवशेष
जो हो तो क्रांति बिगुल
की रणभेरी से
एक समर शेष ऐलान करो।

बहना की आँखों के
स्वप्न दीप
अनुज का अभिमान है तु
तुझे भ्रम है यह,
तेरे पथ में सुरज आगे है,
तु वक्त के हालाहल पर
अब भी, निज तन को
न्योछावर करो और
सकल राष्ट्र के
पटल समक्ष,
एक अपना प्रतिमान गढ़ो।
तभी फिर से कहेगा
देश सकल,
जनतंत्र के परिहार
जनता के जो सेवक
स्वच्छ सत्य का प्रतिक
जय जय जय बलिहारी।

10.बहुत जरूरी है महिला को

बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना
स्त्री विमर्स का युग है अब तो
आँसु पीकर मन जीना
सशक्तीकरण की बात अब करो
निर्भय होकर तुम जीना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना
चाहन करना गहनों की तुम
यही बेड़ियाँ हैं तेरी
अपनी तरह और अपनी खातिर
अब जीने की बारी है
पुरुषों के खातिर अब जीना
सीमा तक उचित हो सकता है
मर्यादा, जो टूट जाएँ
तो घुट कभी भी मत पीना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।
पुरुषों की महिलाओं को
अधीनस्थ बनाने की आदत
प्राचीन है मर्यादित है
एम ने भी एडम के देह पर
हक जमाकर रखा था।
पत्नी तो पति की वामांगी
होकर के जी लेती थी
पर पांडव के हक को देखो
द्रौपदी को दाव लगा जाने ।

इसीलिए युग के समझो
फिर ना कभी ऐसे पांडव की
मान बढ़ाने को जीना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना
गुरु द्रोण और नृप पांचाल भी
एक दाव लगाया था,
तभी द्रौपदी को पाँच पति संग व्याह दिया।
जुआ में हारा, पंच में व्याहा
चीरहरण भी पाया था
कौख की हस्ती भी देखो
द्रोपदी पर आजमाया था
चीरहरण का दंश को देकर
इतिहास लज्जित कर डाला था
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना ।
नाहीं चाहिए भीख में साड़ी
नही चाहिए अब गहना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।
दुहिता कहलाती सीता
फिर ऐसी नियम बनाई क्यों
पिता की दौलत का अधिकारी
पुत्र अकेला क्यों होगा
अधिकार कानुनी मिल ही चुका
तो समाज क्यों नहीं अब माना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।
बहुपत्नी भी एक प्रथा थी
क्रय–विक्रय भी होता था
वस्तु समझ कर नारी को
खरीदा और बेचा जाता था।

खत्म हुआ अब वक्त दरिंदा
अब तुम बढ़ आगे आना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना ।
बाल विवाह और सती प्रथा के
मेघ गरज कर बरस गए
पर्दा प्रथा की बेड़ियों को
अब तुम तोड़ आगे आना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।
दहेज प्रथा का भी आलम
अब नष्ट भ्रष्ट होने को
जाति प्रथा को तोड़ सको तो
प्यार तुम्हें मिल जाएगा
प्रेम कहेगा फिर पुकार कर
कविता कविता को पढ़ लेना
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।
एक रामायण, एक महाभारत
सीता द्रौपदी लाई थी।
रात एक रावण भी एक था
अर्जुन एक दुर्योधन एक था।
तब महायुद्ध ठन आया था,
क्योंकि वीरों में पुरुषार्थ बचा था
धर्म के नाम पर युद्ध रचा था।
उतनी सच्चाई बाकी थी।
अब क्या होगा कैसे होगा
राम कहीं दिखता ही नहीं है।
अर्जुन दरवारी जा बैठा
हर घर रावण जन्म ले बैठा
दुःशासन राजा बन बैठा
कोई कृष्ण अब नहीं बचा है।

राधा हो या मीरा हो
कोई राम अब नहीं धरा पर
सीता हो या सबरी है।
गीता के अवशेष को लेकर
स्वयं गांडीव हुंकार
इसलिए मैं फिर कहता हूँ
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना
स्त्री विमर्श का युग है अब तो
आँसु पिकर मत जीना।
सशक्तीकरण की बात अब करो
निर्भय होकर तुम जीना
फिर कहता हूँ बहना सुनलो,
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना ।
फिर कहता हूँ माता सुनलो
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बन की अब जीना।
थोड़ी बाते फिर कहता हूँ
भ्रम भी अपना तुम तोड़ो
पुरुषों की तरह दिखने की
कोई तुम्हें दरकार नहीं,
पुरुषों की खातिर सजने की
तुमको अब दरकार नहीं
तुम श्रेष्ठ कला हो इश्वर की
बस अपना तुम सम्मान करो ।
नमन् करो तुम निज धरती को
समता का सम्मान करो।
बहुत हो गए पुरुष धर्म को
अब सृष्टि का सम्मान करो।
युग की पुकार को
आत्म ज्ञान, सम्मान करो

करो की जो देश काल
के लिए अभी भी बाकी है
इसीलिए मैं कहता रहता हूँ कि
बहुत जरूरी है महिला को
संबल बनकर अब जीना।

11.जब भी विश्वास सहम जाता है

जब भी विश्वास सहम जाता है
डर जाता है
मन विचलित सा हो जाता है
फिर अटल सत्य भी
भटके पथ पर
शीश नवाने जाता है

जो सक्षम है इस धरती पर
कभी संयम नहीं खोता है
आधे अधूरे जीने वाले ही
डगमग पथ चलता जाता है

अच्छा जीवन जीने की
ललक सभी में होती है
पर जीवन भी तो छलिया है
जो शुन्य से चलने वाला है
उसे वक्त जरा लग जाता है

नव जीवन की आशा लिए सुन
दसो दिशा में जाता है
चारों कोनों में रूक कर भी
जीवन तलाश कर आता है

शांति जिसके जीवन में
कोशो तक नहीं ठहरता है
वह विश्वास कहाँ से लावेगा

जब भी विश्वास सहम जाता है
डर जाता है
मन विचलित सा हो जाता है
फिर अटल सत्य भी
भटके पथ पर शिश नवाने जाता है

12. मुझे आज भी अपने हिस्से का चाँद दिख जाता है।

मुझे आज भी
अपने हिस्से का चाँद दिख
जाता है
हाँ मैं देख लेता हूँ
आज भी, रवि की अंशु को,
जिसमें समाकर
उष्णता और व्यापकता
सिख पाता था।

दुर्गम पथ स्तब्ध मन
चिंतन का पथ उजाला
दिख जाता है
हाँ मैं देख लेता हूँ
आज भी, उस मौलिकता को
जो सहज सरिता के जल के
संग, चिर सपनों का वसन था
उस शीतलता की करूणा गाथा
सिख पाता था।
हाँ मुझे आज भी अपने
हिस्से का चाँद दिख जाता है।

क्यों ठहर गए कदम
ना चल सका थोड़ी दूर और
लौट आने पर
सब ने कहा, तू मंजिल के करीब
था
काश! थोड़ी और चल पाता
जीजीविशा थोड़ी और होती
अभिलाषा ना दम तोड़ती
जिसे लेकर कुंतल विपिन में

जीवन राग कुठिंत कर
नए गीत, सिख पाता था।
हाँ मुझे आज भी अपने
हिस्से का चाँद दिख जाता है।

जीवन में ठहराव
आते हैं
समंदर भी ठहरता है
कुछ छण विश्राम कर
फिर, लहरें आती है।
नए उल्लास के संग
परंतु जीवन के राग रंग
बिखर जाने पर
उत्साह थम जाता है
ना दौड़ पाती है, लहू
फिर से रगों में,
बर्फीला रक्त जीवन
नहीं जी पाता है।
ऐसे ही नए तथ्य
अवसर बिंदु पर
सिख पाता था।
हाँ मुझे आज भी अपने
हिस्से का चांद दिख जाता है

सघनता और विरलता के
अवतानो में
कंठ कमी भारी हो जाता है
कभी मुक्त विलासी बन जाता है
शुद्धि पथ पर इति गाथा स्मरण
करता
नव छंद, नव ताल, मन में
रोम हर्षित कर जाता है
पुलकित खग, प्रथम प्रभात में
कलोल करता गीत गाता
नए सूरज को बुलाता
तिमिर को आच्छादित करता
फिर जगत कुछ सीख पाता है
हाँ मुझे आज भी अपने
हिस्से का चाँद दिख जाता है।

13.जब तक कर सको

''जब तक कर सको''
जहां तक कर सको
साफ–साफ शब्दों में,
सीधे–सीधे काम करो

हाँ नियति भी यही कहती
विधान भी यही कहता
भाग्य भी इतना ही रहता
लक्ष्मी भी उतनी ही रहती।

पर वक्त उलट जाते हैं
अर्थ बदल दिए जाते हैं
कर्म उपकृत कर जाते
क्योंकि अब और नहीं कर पाते,

थक जाता है, तन जब कभी भी
मन बोझिल सा बन जाता है।
सोचकर, शायद आगे भी
कर पाता कुछ और भी
तो लोग प्रसन्न रहते
यशस्वी बन पाता
थोड़ी और दूर तक

परंतु, अनवरत
अविरल सा लगता है
भय होता, जब भी
करना बंद होगा
लोगों की उम्मीदें
ध्वस्त होगी
कृतघ्न हो जाऊंगा
नजर में उनकी।
स्वार्थ रग रग में होगा
अपनी व्यथा का मान करेंगे
मुझे भी कई अपमान करेंगे।

जब तक कर सको
जहां तक कर सको
साफ साफ शब्दों में,
सीधे–सीधे कम करो।

14.गया मैं भी शादी....

गया मैं भी एक
शादी की दावत में
कई चेहरे अलग–अलग
कुछ नए कुछ पुराने
कुछ चमक रहे
कुछ मालिन हो गए थे
मानवीय गुण,
तीक्ष्ण बुद्धि की किरणें
पड़ने लगी एक दूजे पर
और इतिहास के पन्ने खुलने लगे।
सबकी अलग–अलग
एक दूसरे से जुड़ी।

अब कहां समाज
आयोजन करता है
बुलाने वाली प्रथा पर
परंतु अवशेष प्रथा की
झलक पर,
कुछ लोग इकट्ठे घूम रहे थे।
शादी है, कन्या की
बारात आने वाली है
भीड़ में भी
हजार आँखें खुली है
फिर भी कैमरे की
निगाह सब पर जमी है।
सब एक दूजे की फोटो
खींचते, नहीं थकते,

कई तस्वीर लेने वाले
मेजबान के भी है
रखे हैं, निगरानी
कई तरह से।
सब एक साथ
पर मन किसी का भी
किसी का साथ नहीं देता
खुद का मन भी साथ
छोड़कर किसी और के
संग होकर
उमंग करता
नाचता गाता है
उदासी को तोड़ता
दूर भागता
ध्वनि यंत्र बजता
कई गुणा तेज।
परंतु, मन में सन्नाटा।
अद्भुत विचित्रता का एहसास।
मन का सुनापन
नहीं मिटा पा रहा
यह आनंद का उत्सव।

15.ध्वनियंत्र तुम तेज

ध्वनियंत्र तुम तेज बजाओं
फूल की माला खूब लगाओं
नहीं मिल रहा मन से मन,
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

प्रकाश बल्ब कितना भी जला
लो
रंगीन कनाद् कितना भी लगा
लो
नहीं मिल रहा है मन से मन
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

स्वादिष्ट भोज्य का भोग लगा लो
वस्त्र आभूषण लाख चढ़ा लो
नहीं मिल रहा है मन से मन
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

शांति शास्त्र के दीए जलालो
ईश्वर को छप्पन भोग लगा लो
नहीं मिल रहा है मन से मन
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

अपने पराए के भ्रम को पाले
मानवता के गीत को गा ले
नहीं मिल रहा मन से मन
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

ऊँच नीच का भेद भी पालो
फिर समरसता के
गीत भी गा लो
नहीं मिल रहा मन से मन
तब उत्सव आनंद नहीं मनेगा।

16.पिले पत्तों का झड़ना

''पिले पत्तों का झड़ना''
बतलाते जीवन का राज
सिखलाते एक नया राज
जो विधिवत युग संचारी है।

प्रतिफल स्फुरित वसुधा जीवन
नव मंजर सा आनंदित छण
बीता जाता अनवरत मन
जो विधिवत युग संचारी है।

हैबोझ बड़े उत्तर का
किसका दायित्व बोध मन
चंचल है दृग लक्षितमन
आस लिए रूक जाने की
पर क्षति बोध गति दायक है
जो विधिवत युग संचारी है।

पके फलों से तरू का वय
पुष्पों की डंठल से पुरातन का
ज्ञान अभिप्रेत अटल मन
जो विधिवत युग संचारी है।

विप्लव का बोध समय को है
सुख का ज्ञान समय को है
हरियाली अनंत छणों की है
पिले पत्ते युगांत प्रतिपादक है
जो विधिवत युग संचारी है ।

पिले पत्तों का झड़ना
बतलाते जीवन का राज
सिखलाते एक नया राज
जो विधिवत युग संचारी है।

17.शिक्षा दीक्षा

शिक्षा दीक्षा
ज्ञानमान
संचित निधि
इति सत्य का नाश नहीं तुम कर जाना
चक्षु है तो निर्मित पथ का विनाश
नहीं तुम कर जाना।

संस्कार, प्रतिदेय
प्रारब्ध, ज्ञान
क्षमा, दान,
ये शीलन के परियाचक है
अभिमान इन्हीं में मानव का
तुम गौण उन्हें मत कर जाना
चक्षु है तो निर्मित पथ का
विनाश
नहीं तुम कर जाना।

शक्ति संचय
धन, स्वर्ण रजत
मनिका, पाषाण
सर्व लक्ष्मी के उपनाम ही है
जीवन को गति और लय देता
जो जग से ऊपर की बातें
वहाँ ज्ञान चक्षु ही रहता है
अतः निवेदन मानव से
चक्षु है तो निर्मित पथ का विनाश
नहीं तुम कर जाना।

सामर्थ्य जुटा पाओ, अकिंचन
तो जग को कुछ देकर जाना
चक्षु है तो निर्मित पथ का
विनाश
नहीं तुम कर जाना।

18.कितनी इच्छा और अभिलाषा

कितनी इच्छा और अभिलाषा
मानव मन में अब संचित है।

ईश्वर, प्रभु और परमात्मा
कई नाम गढ़े जीवन के हैं।

जग जीवन अमृत फलदायी
निधि का हृदय में उतरायी।

सर्व सुख के इच्छाधारी
स्वर्ग कल्पना के अभिलाषी।

मानव ही जगजीवी
हरित पलीत कानन वन

आत्म तुष्टि निज मन में है
खलु धर्म प्राण धन में है।

कथा अंत में नायक है
ऋषि मुनि गणनायक है।

मृत्यु सत्य का शामक है।
इच्छा और अभिलाषा
इस जगत मिथ्य में
भ्रामक है दुख दायक है।
दुखदायक है दुखदायक है।

19.वीरू कर बेटा

वीरू का बेटा
हंसता खेलता
किलकारियाँ भरता
अभी सड़क पर दौड़ता
गिरता रोता भागता
कुछ ही दिन तो हुए
आज वह कामगार है
हाथों में कुली के औजार
लेकर शान से बढ़ता
बचपन भी ना खुल पाया था
जवानी कब और कैसे होगी
ना स्मरण है
ना कोई अंदेशा।
वीरू का बेटा
जन्म से अंजानी
मैं तो वीरू को
बच्चा जानता और समझता
परंतु सत्यता का करवट है
बेटी भी भावना है
परंतु प्रातः नहीं जाती है
ज्ञात, अज्ञात विदित हुआ
वह काम कर जाती है
पर्वतों की ऊंचाई कम हो जाती
नदियों की गति और गहराई
शिथिलता को प्राप्त करती
क्यों नहीं अनाज के बीज
और दाने स्वतः समाप्त हुए

भूख के दाने तलाशते
ये मानव जीव
अट्टालिकाएँ किसके हैं
दाना चूगते जीव
अथक परिश्रम
उदर क्षुधा की अग्नि प्रज्वलित है
प्रवाह है जीवन संघर्ष का
कब तक चलेगी
भूख से लड़ाई
जिंदा रहने की जीद
कब तक चलेगी
विद्यालय खुले, बच्चे परिश्रम
के लिए खान खदानों की ओर
गाड़ी गराज, मशाले चक्की की ओर
होटल रेस्टोरेंट में जूठन
उठाते, तश्तरियाँ धोते
कोन है ये।
क्या किसी और भारत की
भूमि के शिशु गण है।
बेल्ट टाई जूते मौजे मेंसजे
बच्चे कॉन्वेंट की ओर महंगी गाड़ियों पर
वहीं दूसरी ओर
अर्ध नंगे बच्चे
गंदे कूड़े के ढेरों में
कचड़े के अंबरों में
पॉलिथीन चूनते
पानी के बोतल ढूंढ़ते
पीठ पर नवजात धोते
''फावड़ा चलाती महिला''
चप्पल के बारे सोचतीसमझती
शिशु को मातृ रस का पान कराती
शेरनी ही तो है वो

जो आज के युग में भी
अपने बच्चों को दूध पिलाती
अलग–अलग किस्म की दुनिया
इतनी सी भुक्कड़ पर
सभी तो वैसे ही
वीरू के पुत्र, कन्या वह पत्नी है
जो ब्रह्मण्ड सृष्टि में
आज भी अनंत निरंतर कार्यरत है।

20.वृक्ष के असंख्य पत्तों को

वृक्ष के असंख्य पत्तों को
कभी उलझते नहीं देखा
एक डाली के कई डाल
''डाल के फिर कई डाल''
जितने डाली उतने हजारों
पर्ण पत्ते साथ रहते
खुशी गम में साथ रहते
झूमती सर्वदा गाते
कभी उलझते नहीं देखा।

एक तरुवर के अनगिनत
ये पर्ण सुंदर और सुनहरे
बारिश में भी ये साथ भीगें
शिशिर बूंदों को भी देखो
एक पत्ते के दुःखों को
संग मिलकर साथ झेले
पर वृक्ष को अक्षुण्ण रखा।
कभी उलझते नहीं देखा।

अनगिनत से तरुपत्ते
ग्रीष्म में भी साथ सुखे
हेमंत के रंगों में खेले
बसंत में भी साथ झूमे
जेठ की गर्मी में सुखें
स्वयं मूर्छित प्राण लेकर
प्यास वाले कांत लेकर
वृक्ष को अक्षुण्ण रखा
कभी उलझते नहीं देखा।

स्वयं प्रेरित हो सको तो
गुण को सीखो, धर्म देखो
संग रहकर जिंदगी के
गीत सीखो
धूप में भी शीत में भी

वृक्ष को अक्षुण्ण रखा।
वृक्ष के असंख्य पत्ते,
कभी उलझते नहीं देखा।
जाति रखो, धर्म रखो,
भिन्नता तुम लाख रखो
एक यही संदेश रखो
मानवता अक्षुण्ण रखो।

ना विचारे मिल सकेगी
हर किसी की आपसे
पर्ण है ना पुष्प है
हम स्वयं मानव रूप है
जिस भूमि में वास करते
उस भूखंड को अक्षुण्ण रखो।

करोगे तुम चतुर बातें
एक दूजे को गिराकर
छत पर चढ़ोगे, गुण तुम्हारे
विभिन्नता अनेक रखो
एक यही संदेश रखो
देश को अक्षुण्ण रखो।

21.जन्म से रिस्ते

''जन्म से रिश्ते''
मनुज के संग होते
पर निभाना
क्यों कठिन हो
जान पड़ते।

नीड़ में पक्षी की भाँति
संग दिवा–स्वप्न जागे
जनक पक्षी अन्न के दाने चुगते
मातृशक्ति जने चूजों को खिलाते
हैं बड़ी अनिष्ठ कहानी
बस इसी आरोह पर ही
जन्म के रिश्ते
मनुज के संग होते
पर निभाना
क्यों कठिन, हो जान पड़ते।

फाख्ता के नवजात बच्चे
कोई उड़ते बीजलाते
पर कई नन्हों के खातिर
स्वयं परिश्रम सींच लाते
उड़ना सीखाते, जीना सिखाते
पंख टहनी भरकर,
उड़ना सीखाते
बस इसी आरोह पर ही
जन्म से मनुज के संग होते
पर निभाना क्यों कठिन, हो जान पड़ते।

22.पियुष तुम अमृत

पीयूष तुम अमृत
सुधा को हे प्रिय,
बस तुम ही मन के मीत
उमड़ते मेघ के तुम दूत

तुम अमृत
सुधा को है प्रिय,
श्वेतकण, पर्वत शिखर पर
हिम कण, गिरिराज पर

तुम ताज हो प्रितम तुम ही हो
जिंदगी के राज, लेकर
गीत हो, नीत प्रीत तुम हो

पियुष तुम अमृत
सुधा को है प्रिय,
बस तुम ही मन के मीत
उमड़ते मेघ के तुम दूत।

23.मुख्य शहर के बीचो बीच (खिलौने खाली)

मुख्य शहर के बीचो–बीच में
हाट आज भी लगता है
प्रतिदिन दुकानेंसजती है
सुरज के साथ, नईकिरणों के संग

उम्मीद नई–नई लेकर,
गठरी के गिट्ठे खुलते है
और शाम ढले, रवि के संग
गठरियाँ बाँध रखी जाती हैं।

बीच बाजार खिलौने वाली
नित्य दुकान सजाती है।
प्रातः काल पूजन पाठन कर
देवभोग की कामना लेकर

सड़क किनारे वृक्ष के नीचे
नई दुकान लगाती है।
खुशी होती है, संग प्रांत अंशु के
मन ही मन गीत वह गाती है
हँसती है अलाती है और
कल की बात बताती है

नए–नए रंग रंगीन खिलौने
मन को बड़े लुभाते हैं
बेच खिलौने, नए सपने
मन ही मन,बुन जाते हैं
बिक गए खिलौने, आज अगर
मुनिया के कपड़े लेने हैं
सोनू की साइकिल टूट चुकी
पापा की चप्पल लेनी है

अपनी भी दवाई लेनी है
माता के भुख मिटानी है,
कई और कामना, प्रातः काल में

देख खिलौने जगते है
पर कैसा था मनहुस दिवस
सब दाम पूछकर निकल गए
परती न पड़ी और बिकी नहीं
अरमान हुए सब पस्त
ये दिन भी निकल गया

अब रात अंधेरी हो जाए
कोई फर्क नहीं
सपने जो अधूरे टूट गए
कुछ भी गा ले, गाने का कोई फर्क नहीं
है वही खिलौने शाम ढले
विष प्याले लगने लगते
जो सुबह सवेरे होते ही
अमृत का प्याला लगता है

आने वाला सूरज होगा
फिर सपनसलौने लाएगा
कल सुबह–सुबह गठरी खुलकर
फिर नई दुकान सजाएगा।

24.मित्रता वह प्रीत है

मित्रता वह प्रीत है
जो भीतता नहीं गर्व से
मीत जो हो सामने
सारी हदों को तोड़ता।

अक्षरों को शब्द का सानिध्य हो
शब्द को एक पंक्ति की तलाश
हो
पंक्तियाँ निबंध को है ढूंढती
पर मूल तो है अक्षरों की
वर्णका।

क्यों कठिन पाषाण जल में टूटता
अग्नि आखिर जल से ही क्यों बुझता
चाँद–सूरज एक गगन में
संग उगकर साथ क्यों नहीं डूबता

मर्म है वसुधा सजेगी
संग सूरज के जगेगी
किंतु चंदा के मिलन पर
शीत छाया बन ढलेगी।

वक्त है, मानव नहीं युग का रचयिता
वक्त की नैमत को छुकर
मेघ गर्जन बोलता
बादलों का संग पाकर
बिजलियाँ पर खोलती।

मित्रता वह प्रीत है
जो भीतता नहीं गर्व से
मीत जो हो सामने
सारी हदों को तोड़ता।

मन की दीवारें,
पार कर,

अग्निशिखा, है मित्रता
शब्ब के बांधे ना बंधता
अक्षरों में ना सिमटता।

बुँद बारिश की गिरे तो
फर्श को नहीं ढूंढता
स्वर्ण पर्णों में भी गिरकर
है धरा को चुमता।

बंधनों को चीरती,
सूरज की किरणें
चाँद के रश्मि को देखो
रजनी बंधन लाँघ कर भी
है धरा को चुमता।

मित्रता वह प्रीत है
जो भितता नहीं गर्व से
मीत जो हो सामने
सारी हदों को तोड़ता।

25.कुछ कहना है आगे

कुछ कहना है आगे
तो कह दो अपनी बात
मन में जो भी हो आघात
शब्द चुनकर अर्थ लेकर
कह सको तो कह दो अपनी बात।

यह क्षण है जो रूक कर कोई
बातें तुम्हारी सुन रहा है।।
सुनता नहीं कोई किसी का
धन्य तुम हो मंच पर
बातें बनाना छोड़कर
सीधे सरल शब्दों को लेकर
कह सको तो कह दो अपनी
बात।

जीवन तरंगें खिल रही
उठ रही अमरता गीत के
उसमें जुड़कर सौ कलाएँ
नृत्य करती मीत के
आज कोई सुन भी लेगा
मन से मन का भेद लेगा
स्वच्छ नश्वर शब्द चुनकर
कह सको तो कह दो अपनी बात।

26.पैमाना जितना पीता है

पैमाना जितना पिता है
उसे माप का साँचा होता है,
पीने वाले की जिद देखो
पैमाना भर पी जाता है।

बुँदो को थोड़ा ढलने दो
बारिश उन ही की कहानी है
जिस शौक से सजकर आएँगी
जल जलकर सुरावरण होंगी।

सागर का जल, नदियाँ भरतींहै
वो विष्णु कांता, मधु मंडित हो
धरती का सेज सजाती है
फिर व्योम व्यग्र हो जाता है
पैमाना घर पी जाता है।

वसुधा अंबर के योगासन से
नव प्रकृति योजना सृजित हुई
सुरज चंदा के संगम से
अलौकित जग निर्माण हुआ।

है सृजन सत्य का बीज धरे
कब मदिरा चंचल होती है
इतराते यौवन, गुरूभार लिए
अधराधर चुंबन लेता है।
पैमाना भर पी जाता है।

पुष्पित प्रेम, पल्लव पाकर
क्यों मंद मंद मुस्कांता है
झंकृत वीणा सुर कसता है
मधुमास मिलन कहलाता है।

दो घूंट पिलाने की जिद है
तुम आशा अंबर कर डालो
तिमिर काल के मध्य प्रहर
पैमाना जब भर जाएगा
लथ पथ होकर जीवन पथ पर
आलिंगन छोड़ ना पाओगे।
ऐसे पैमाना जितना पिता है
उस माप का साँचा होता है
पीने वाले की जिद देखो
पैमाना भर पी जाता है।

27.तेरी गली से गुजर कर

तेरी गली से गुजरकर
मुझे उसे पर जाना है
वहाँ इश्क का बाजार है
मुझे भी कुछ सामान लाना है।

जेठ की दुपहरी में
या अमावस काली रात में
कई बार गुजर गया हूँ
अपनी जरूरत की कुछ चीजें
जिंदा वापस लेकर आया हूँ।

ए मेरे दोस्त
तू जागता भी हो
तो फिर सो जा
दोस्ती की खातिर
रात का माहौल बना दे,

क्योंकि, तेरी गली से गुजरकर
मुझे उस पर जाना है
वहाँ इश्क का बाजार है
मुझे भी कुछ सामान लाना है।

28.फिर से रूक जा, जरा धीरे धीरे

फिर से रूक जा, जरा धीरे–धीरे
जिंदगी के मजे मिल रहे हैं
पास आज जरा धीरे–धीरे
उनकी सूरत को देखूँ जरा
जिंदगी से बहुत मिल रही है।

जिंदगी से बहुत मिल रही है।।
हमने अब ही तो देखा उन्हें है
इश्क–ए–मिन्नत मुझे मिल रहे हैं
उंगलियों में चूभे थे जो कांटे
उनकी सूरत को देखो जरा धीरे–धीरे
हाँ गुलाबी कली खिल रही है।
हाँ गुलाबी कली खिल रही है।।

पाँव रख दे जमीन पर जो उनकी
नूर शबनम की शोहबत बनेगी
कायनाती जो शेहरा सजेगा
उनकी सूरत को देखो जरा धीरे–धीरे
जिंदगी से बहुत मिल रही है।
जिंदगी से बहुत मिल रही है।।

मुकद्दर जो मेरा मुकम्मल
पास जाकर जरा फिर रूकेंगे
इश्क–ए–इतर की खुशबू मिलेगी
जिंदगी को रवानी मिलेगी
पास लेकर जरा चल मुझे
उनकी शोहबत में हम धीरे–धीरे
हाँ जिंदगी मिल रही है।
हाँ जिंदगी मिल रही है।।
उनका दीदार चिलमन से कर लुँ
चुपके–चुपके नजर धीरे–धीरे

मौत तुम संग, लिपट जाऊंगा मैं
ना मुरादे रहेगी, ना उम्मीद
बाकी
जिंदगी को कहानी मिलेगी
पास आजा जरा धीरे–धीरे
उनकी सूरत को देखुँ, जरा
धीरे–धीरे
हूबहू–हूबहू–ए–खुदा मिल रही
है
हाँ जिंदगी से बहुत मिल रही
है।
हाँ जिंदगी से बहुत मिल रही।।

29.परतंत्र था ये देश...

परतंत्र था यह देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यारा।

रूकती नहीं है आंख से
खुशियों के ये आँसू
गंगा की बेड़ी खुल गई
यमुना हुई आजाद
आजाद हिमालय ने छुलिया है
आसमान।

परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश यह प्यारा।

सजते हैं इसके
आँख में कई रंग में प्यारे
हिंदू है, न मुसलमान
कोई सिख, ना इसाई
हर रंग में सजे हैं।।
हम सब है सभी अपने–अपने
देश के भाई।

सूरज है सबका एक ही
चंदा है सभी का
हाँ एक सरजमी है
और एक आसमाँ,
किस बात की पड़ी
आपस में है लड़ाई।।

बीते हुए डुबे क्षणों को
भूलना होगा।
जातिवाद में बांटा हुआ
गम भूलना होगा।।

निर्धन हो या धनी हो।
हर बात को भूलो।।
वक्त हमारा है।
इसे तो सीखना होगा।।
हर काली–काली बात को
मिटाना पड़ेगा।

पाखंड, मुल्ला अब नहीं
कोई बीच में होगा।
गीता, कुरान में नहीं
कहीं वैर लिखा है
बस प्रेम लिखा है
कभी भी गैर नहीं है।

कोई नाम ना लूंगा
मगर ये लाल वतन है
लालों का वतन है
ये महाकाल वतन है।

आते गए मिटाते गए
करते वह हाय हाय
ये देश मेरा है।
ये देश मेरा है।

कहने से क्या होगा
नियत भी चाहिए है
है गीत पुरानी इतिहास चाहिए।

लिखे हैं कई गीत
बलिहारी जाने की
वो लाल मिट गए
मिट्टी में मिल गए
उम्मीद बची थी
यह देश बचेगा।

माता हमारी मिल गई तो
लाल मिलेंगे, हाँ लाल मिलेंगे
कमाल मिलेंगे।

फिर राम मिलेगा,
फिर श्याम मिलेगा।
गांडीव अर्जुन यहाँ
फिर कारण मिलेगा।
ये देश मिल गया तो।।
फिर मेरे जैसे
कितने यहाँ लाल मिलेंगे।
यही सोच लेके चढ़ गए
शुली व फाँसी में
और ले चले अंबर में
तिरंगा निकाल कर

परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यारा।

ये देश मिल गया
विधान मिल गया
सारे जहां से
अच्छा संविधान मिल गया।
जिसमें जन्म से मृत्यु तक का
ज्ञान लिखा है
हर भारती के मान का
सम्मान लिखा है।
लिखा है इसमें, रोटी सभी को
हक से मिलेगा।
ना कोई ऊँच कुल,
नीच कुल का होगा।
औरत पढ़ेगी देश में
घूंघट उतार कर
अब ना कोई जलेगा
चिता में किसी के संग।

विधवा अगर जो चाहले
घर फिर से बसेगा।
लंगड़ा भी दौड़ेगा
अंधा भी देखेगा।

रोजी में कहीं भेदना, कोई
भावना होगी खेतों में जल की
पूरी–पूरी पावना होगी।
उद्योग लगेगा
अभियंता बनेगा।

मजदूर का बेटा भी
अबअभियंता बनेगा
परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा।
किसान का बेटा भी
अगर चाह ले, तो नेता बनेगा।
मानव जन्म लिया है
तो मल व ना ढोएगा।
चाहेगा अगर जुनून से
तो देश का प्रणेता बनेगा।

होगा ना कोई भेद
न प्रवंचा बचेगी
सारे के सारे द्वार
सबके लिए होगी।
हर हाथ में कलम का
अवसर जो मिलेगा
ना भूख रहेगी
ना प्यास रहेगी
मौलिक अगर अधिकार
तो कर्तव्य भी होगा।
अब देश के भीतर
नहीं गद्दार रहेगा।

संविधान के विधान में
बच्चे भी रहेंगे
तो जवान भी होंगे।
बूढ़े को भी हक का
उन्हें सम्मान मिलेगा।

नायक जो कोई होगा
तो वह मत से बनेगा
जनता जिसे करेगी
हकदार वह होगा।

परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा।
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब को हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यारा।

खतरे कई है देश के
विधान में बाकी
सांप्रदाय कोई अब नहीं
अलगाव बनाना
जो हो सके तो देश में
एक को ही लाना।

जब देश बचेगा,
तब तुम बचोगे
फिर राज करोगे
और राजा बनेंगे
अभी देश बचा लो
संविधान बचा लो
परतंत्र था यह देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यार।

माँ भारती के आँख के
तारे तुम ही तो थे
मन ना लगा
और ठान ली
तुम स्वर्ग ही लोगे
घर अलग बना ली।।
जब माँ हमारी एक थी
हम भाई–भाई थे
पंजाब का पानी
सभी पीकर पले बढ़े
दुश्मन की चाल चल दिए
दुश्मन की बात पर
अब देख लो अपना चमन

अम्मी को छोड़कर।।
हम अपनी माँ के संतान है
अपना ये वतन है।

यह देश बच गया
और हम भी बच गए
जैसे भी हैं हम
आपसे अच्छे ही बच गए।

जब देश बचेगा
तब तुम भी बचोगे
फिर राज करोगे
और राजा बनोगे
अभी देश बचा लो
संविधान बचा लो।

परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आँख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यारा

भारत की ये नदियाँ
सभी है प्रेम को ढोती
पर्वत के ऊंची चोटी पर है
परमेश्वर का डेरा।

सागर के हृदय तल में जा के
ढूंढ के देखो
बस प्रेम के सिवा
तुम्हें और कुछ ना मिलेगा।

इस देश के हर फूल में
भी प्रेम मिलेगा।
माता के हृदय में
भी सबको प्रेम मिलेगा।
वायु में प्रेम है
यहँ मृदा में प्रेम है।
प्रकृति के हर कण में
बस एक प्रेम मिलेगा
यह देश है प्रेमी का
बस प्रेम मिलेगा।

परतंत्र था ये देश
हमको जान से प्यारा
स्वतंत्र हुआ देश
सबके आंख का तारा
अब लो हुआ गणतंत्र
मेरा देश ये प्यारा।
हाँ हाँ यही है देश
भारत हमें प्यारा।

अभी तो पूरी उड़ान बाकी है दोस्तों
300 साल पहले जो आजाद हुए
उनकी पंक्ति में सिर्फ 75 वर्ष में बैठ गया।
उड़ान है हमारी चार गुनी तेज
बस गद्दारी ना हो तो आधे से समय
में पूरी दूरी तय होगी।

30.उतार लिए झण्डे....

सूरज के ढलते ढलते
लिखा हुआ नियम है
ऐसे ही हमको करना।

राष्ट्र प्रेम का प्रतीक लगता
लहराता है अंबर में
मन में उल्लास जगाता
निजता का गौरव गाता।

विदेशी राज के आलम में
अपना तिरंगा नहीं रहा
बाकी तो सब कुछ अपना था
अंबर धरती तक अपना था।

यही मान अभिमान दिलाता
बाकी तो सब कुछ यूं ही है
पहले अंग्रेजी कानून बना
फिर हिंदुस्तानी राज आया,
हम जहाँ रहे, हम वही रहें।
बस झंडे में अंतर आया।।

31.दिनानाथ की मृत्यु

अग्नि देवी,
व्योम की ओर लहरा कर
अग्नि शिखा को उत्प्रेषित करती
स्थूल से सूक्ष्म की ओर
अनंत दिशा से गगन को चूमती।

फिर एक आत्मा का
मिलन परमात्मा से हो रहा
सत्य का परम सत्य से
और एक जीवन धारा का
विराम गति को प्राप्त हो रहा।

सब कुछ छूट गया
या छोड़ गया,
हर दिन वो, समेटा करता था
अपने जिंदगी और उसके
जीने के सामान
अनजान क्षितिज में
त्यागी को तप प्राप्त हो रहा।

निहारते निहारिका को
सब अपने पराये
वो आकाशगंगा में डूब रहा
वह स्नान कर रहा दुग्ध मेखला
में
गति को सद्‌गति प्राप्त हो रहा।

जिस हृदय में वेदना
संचार होती थी
काँटे का दर्द हो
या, अंतर्वेदना
चीत्कार ह्रदय से अतिथि
विभक्ति ह्रदय, अग्नि बेदी को समर्पित हो रहा

आँखें जो किसी के दर्द में
आँसू बहाकर,
जीने की राह दिखाती थी,
देखती थी
आज स्वाहा—समर्पित हो रही।

शव यात्रा के लोग
बातें करते, बड़बड़ाते
करनी का बखान करते
मानो उसके रंग मंचीय जीवन में
क्या अदाकारी थी उसकी
सभी दुर्गुणों को भुलाकर
सद् प्रवृत्तिक गुणों का विवेचन
यात्रा वृतांत की इतिवृत्ति गढ़ते, बनाते

कर्म कर्मांतर
दर्द की लहर, वर यात्रा की
संस्मरण
खुशी के गीत, बाजे,ढोल, नगाड़े
गगन भेद कर आतिशबाजी
यही सब लोग थे बरात बनकर
झूमते गाते आज भी ढोल है, पर
ये अजादारी है
हृदय विदारणा, कलेजे का फट
जाना
यह भी ढोल यात्रा है, वह भी
ढोल यात्रा थी
एक ढोल ओर बजा होगा धरती
में आने के दिन पर वह लोग
शवयात्रा के ढोल में शामिल ना
थे यही थी, वो नख सिख
समर्पित
अग्नि देवी
व्योम की ओर लहराकर
अग्नि शिखा को उत्प्रेषित करती
स्थूल से सूक्ष्म की ओर
अनंत दिशा से गगन को चूमती।

32.थोड़ा और मधुर कर दो

थोड़ा और माधुर कर दो
थोड़ा मिठास भर दो
ये मेरी जान की खातिर है
थोड़ा खून मिला कर दो।

यह बात पुरानी है
पर गीत नया कर दो
दिल के तारों से सजा
एक गीत नया कर दो।

मैं अभी तलक उसको
कुछ कह नहीं पाया हूँ
कुछ सुनहरा सा कर दो
नीला नीला कर दो
मेरी जान के खातिर है
थोड़ा खून मिला कर दो।

बचपन की यादें हैं
भुली बिसरी बातें
अभी घुल मिल जाने दो
थोड़ा का लेने दो।

पहली वह बारिश थी
छाते जो छुपा कर हम
तेरे साथ में भींगे थे,
अकेले राहों में,
साइकल की हवा को भी
खुद से ही खोली थी
तेरे साथ चल सकूँ मैं तो
जाने क्या–क्या करता था।
दो शब्द चुरा कर दो
मुझे प्यार जताना है
दुनियाँ से छुप–छुप कर
मुझे यार बताना है।

गीतों को अंधेरों में
कोई और ना ले लेना
यह मेरी जान की खातिर है
मेरा खून मिला कर दो।

जाने वह कहाँ होगी
कैसी दिखती होगी
मुझे चाँद लगाती थी
अब कहाँ छुपी होगी।

मेले में, अकेले में
कुछ कह नहीं पाया था,
नजरेंझुक जाती थी
जब देखती मुझको थी
जब ओझल होती थी
मैं पागल होता था
उसे ढूंढना चाहता हूँ
दीदार चाहता हूँ
कोई तो पता दे दो या
उसे बता दो तुम
हाँ प्रेम आ रहा है
तेरा नाम छुपाता है।

शब्दों में जान भर दो
उसकी पुकार कर दो
मंजिल वो मेरी नहीं
मैं राह ढूंढता हूँ
ये शीत रक्त मेरा
गुनगुना बनाकर के
दिल के तारों को ले
एक गीत बनाता हूँ
थोड़ा और मधुर कर दो
थोड़ा मिठास भर दो
ये मेरी जान की खातिर है
थोड़ा खून मिला कर दो।

रातों को सपनों में
मुझे ढूंढती ही होगी
हाँ क्योंकि उजालों में
ये अजीम गुनाही है
उसका रखवाला है

वो रखवाली उसकी
पर दिल के मंदिर में
मुझे पूजती ही होगी
थोड़ा और माधुरी कर दो
थोड़ा मिठास भर दो
यह मेरी जान की खातिर है
थोड़ा खून मिला करदो।

33.जाती नही है दिल से

जाती नहीं है दिल से
दिल भरा भरा सा है
आँखों में उसका चेहरा
हाँ हरा भरा सा है।

जो जख्म दिल ने पाए
मरहम दिया था उसने
आँसू के रंग लेकर
खुद रंग किया था उसने

हाँ हुस्न सजा हुआ था
काजल के रंगतों से
माथे की लाल बिंदी
भूला नहीं हूँ अब तक।
जाती नहीं दिल से।

दिल भर भरा सा है
आंखों में उसका चेहरा
हाँ हरा भरा सा है।

उसने कहा था
खुलकर बातें ना कर किसी से
छुप–छुप के कर रहा था
दीदारे दिल उसी का
अब आस भी नहीं है
उम्मीद ना है बाकी
फिर भी उसी की आँखें
नजर–ए–हयात में है
जाती नहीं दिल से।

34.वसुधा ने बीज धरे

वसुधा ने बीजधरे
तो लता कुसुम जन्मे
माता ने कोख धरे
मानव केतन जन्मे
सदृश देखता हूँ
सुअवसर इति आदि
है मातृ शक्ति जन्मे।

मन विह्वल विह्वल है
स्वर्ग में प्रकाश भरता
किरणों के पुंज लेकर
पुष्प की गरिमा है
येलोह–धातु तन में
ममता के मंदिर है।

आंखों में प्यास लिए
अंबर की रह तके
वो तनमय लाल मेरा
वापस घर आएगा।

माता तो माता है
उसमें तो ममता है
पुत्र स्नेह मन में है
आशीष द्वंगों में है।

वह तन का टुकड़ा है
मेरे मन का टुकड़ा है
तन के अग्नि–क्षुधा को भी
कभी पूरा नहीं दिया
ना वसम दिया तन को
ना नींद थी आंखों में
सब था, सब है मेरे
लल्ला को देना है
लल्ला को देना है।

वो दूर शहर में है
पढ़ता और लिखता है,
उसे भूख लगी होगी
उसे प्यास लगी होगी
मन विचलित रहता है
ममता के आंचल में
तेरी छाँव रही होगी।

उम्मीद नए जगते
सपने नए जगते हैं
इतने सुंदर जग में
मेरा लल्ला आएगा
घोड़ी पर बैठेगा
दुल्हन लाएगा
वो श्याम सलौना है
गिरधर गोपाला है
सब कष्ट निवारेगा
और जग उजियारेगा।

35.सागर से उठती लहरें

सागर से उठती लहरें
और मन की हिलोरे
दर्द बताती है अपनी
समझना तब भी कठिन थी
समझना अभी कठिन है।

कोयल के कुहुक
मोर की केकी
हिसाब मांगती हक की
समझना तब भी कठिन थी
समझना अभी कठिन है।

थकता किसान, हारता खिलाड़ी
निराशा मन और जुझता विक्रांत
तवज्जो मांगता हिस्से वाली
समझना तब भी कठिन थी
समझना अब भी कठिन है।

36.जींदगी बड़ी जीवंत शब्द है

जिंदगी बड़े जीवंत शब्द है
किसी के जिंदा होने की कहानी है
एहसास करती सुख और दुख के
बिखरे पलों का बांधती एक गठरी।

जिंदगी बड़ी ही मीठी शब्द है
कानों में रस घोलती कहानी है
जोड़ती यादों को बिना भूले
टूटते रिश्तों को एक पड़ाव
देती।

जिंदगी एक गीत है, सुरीली शब्द है
धूल है, तान है और अवतान भी है
रस में लिपटी मधुर पान है,
जो नित्य ही विलुप्त होती
चिरंतन आजीवित महाज्ञान है।

37.हाँ बदल देनी चाहिए इतिहास

हाँ बदल देनी चाहिए इतिहास
मगर यह शायद सफल नहीं होगा।
हाँ बातें बदली जा सकती है
उसके रूप और तरीके बदली जा सकती है।
असल में बदलना नहीं है मुहिम
स्थापित करनी है अपनी कुछ चीजें
बदलकर उनका नाम पट्ट पर
अपनीलिखने की जीद है तुम्हारी।

हाँ बदल देनीचाहिए इतिहास
आक्रांताओं की कुत्सित वीरता
और विभत्स पराक्रम नीरीह
लोगों की नृशंस हत्या
और गद्दी की लड़ाई जो खून
की प्यासी हो।

अपनी विनम्रता और सादगी
जो आमंत्रित करता था विश्व भर से
रक्त पिपासु और धर्म विजेताओं को
यह बदले में बदलने की आग है
लगी है, लगनी चाहिए, लगनी चाहिए।

वास्तविकता से दूर नहीं
नजदीक रहकर लगनी चाहिए
आगे जिसमें आग की सच्चाई
की क्षमता और सच की
व्याकुलता हो।

हाँ जो महाभारत की सच्चाई
बयां कर सके कारण सहित
भीष्म का पिता के हवस के
लिए कन्याओं का धार्मिक हरण
लिखनी चाहिए।
भीष्म का शुद्र कन्या के गर्भ से
जन्म का सचित्र व्याख्या

लिखनी चाहिए।
कुंती कुँआरी माता थी
पुत्र को गंगा के हवाले कर दी
लिखनी चाहिए।
कर्ण की यातना, व्याख्या,का
समुचित मूल्यांकन, लिखनी चाहिए।

द्रौपदी चीरहरण काल में
युद्ध वीर, नीति वीर और
दानवीर का
मौनसतब्ध रहकर
राजधर्म निभाने से विस्तृत
व्याख्या

लिखनी चाहिए।
रामायण में राम की लीला
सूर्पनखा प्रसंग,सबरी प्रसंग,
श्रवण व्यथा
बाली वध,़ नल नील गाथा
क्या–क्या लिखोगे लिखनी चाहिए।

मौर्य काल के राज काल को
क्षत्रिय स्थापित करना है
शुंग वंश के संस्थापक
और मौर्य बृहद्रथ के हत्यारे को
राम के रूप में स्थापित कर
क्या लिखोगे, लिखवा दो।

सिकंदर आया, गया
क्या हुआ, क्या लिखना चाहते हो।
अलाउद्दीन को क्या बदलोगे
अकबर को क्या लिखोगे
महाराणा को बताना चाहते हो
लिखो मगर स्वीकार करने की
शक्ति को हृदय बंद कर
करीब जाकर लिखो।

मिर्जापुर, मीर कासिम, हैदर,
टीपू, बहादुर शाह जफर,
क्या बदल देना चाहते हो
कैसे बदल देना चाहते हो।

नेहरू को बदलना है,
गांधी को लिखना है,
सावरकर को लिखना है,
सुभाष की कहानी को बदलना है,
पटेल को लिखना है,
खुदीराम, असफाक सब कुछ
बदल कर गोड्से को लिखना है।
क्या लिखना, है ऐसा नहीं है
भ्रम है तुम्हारा।
जो लिखोगे वह इतिहास होगा।
यह ज्ञान कहाँ से मिला
जो लिखोगे वह कहानी होगा।
इतिहास जो है वही रहेगा।

क्या लिख सकोगे,
शुद्रों की यातना का इतिहास
क्या लिख सकोगे,
स्त्री शोषण का इतिहास
बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी
क्या लिखना चाहते हो, नये
इतिहास में,
भूल होगी,भ्रम होगी,नाश होगा,

पिता के घर को तोड़कर
नया बनाना हुनर नहीं है,
नया करो, गढ़ो जो,
नया इतिहास बनेगा।
इतिहास बदलने से पहले
अपने पूर्वजों को बदलना होगा।
उनकी सच्चाई और कर्मठता को
बदलना होगा।

संभल जा और आसमां की ओर
देखकर मत करो,
क्या आसमां के रंग बदल लोगे,
धरती का आकार बदल लोगे,
नहीं, तो फिर
भूगोल इतिहास का हिस्सा है
असफल प्रयास व्यर्थ मत कर

कर्मनाशा, सजा सत्य नाश
कहलाने
की दृढ़ इच्छा त्याग दो
वर्ना आगे की पीढ़ियाँ
तुम्हारा नामों निशान बदल
देगी।

38.अभी धूप निकली थी

अभी धूप निकली थी
मौसम हवा गर्म हो गई
शिखर पर वो सूरज
चरम पर थी गर्मी।

ये पत्ते हरे–मरुझे मुरझे
मगर जान बाकी,
जड़ों में थी पानी
मगर थोड़ी–थोड़ी।

बिना मेघ, वर्षा
ना आती अकेली
है जलती थी धरती
मगर थोड़ी–थोड़ी।

39.राह–ए जिंदगी...

राह–ए–जिंदगी बड़ी बेजार हो गयी
ये दिल तेरी चाहत में बेकरार हो गयी।

जब भी जिया सुकून मयस्सर
नहीं मिली, जो तू नहीं मिली तो
इन्ते–ख्वाब मिल गयी।

है इतनी हकीकत की दिल में तू बसी हुई
कोई भी हो इसके बाद में साँसे निकल गयी।

है धूप–छाँव जिंदगी के फलसफें
मगर
जो तू ना मिली मुझको तो
बगिया उजड़ गयी

साँसें तो तेरे नाम कर दी अपनी जवानी
बेदर्द बेवफा हो तुम मुड़कर निकल गयी।

तुझ सा मिलेगा यार जिंदगी
निकल पड़ी
ना मैं रहा ना तुम रही गाड़ी
निकाल गयी।

40. खुश्बु जो मेरे साथ है

खुशबू जो मेरे साथ है
वह जिंदगी मेरी
ख्वाबें जो मेरे साथ है
वह जिंदगी मेरी।।
हमने भी बड़े प्यार से
बगिया लगायी है
कुछ फुल लगाये,
पत्ते भी सजाए।।
फिर प्यार के रंगों से
हमने नीत सँवारे हैं।

सादा है कई फूल जो
फूलों के बीच है
कुछ लाल फूल है जो
हमने की बड़े प्यार से
बगिया लगायी है
कुछ फूल लगाए
पत्ते भी सजाए।।

रात की ना पूछो यारों
पूरे दिन की याद आती है
हैये सिलसिला बेहिसाब का
दिन जब भी निकल आता है
पूरी रात की कहानी याद आती है।

बस फुर्सत की ना पूछो यारों
कमबख्त लम्हें गुजर जाते हैं
कुछ यादों के सायों में
कुछ साये की यादों में
अब उन्हीं लम्हों से लम्हे चूराना
हुस्न–ए–जिंदगी कहलाती है।

बड़ी बेरुखी है दुनियाँ
बस इश्क माँगती है
दर्द–ए–इश्क बयाँ करना
हिकरत होती है
शोलोंपे कदम हों
पाव जले तो जले
जिंदगी होठों पर खुशी माँगती है
रात को ना पूछो यारों
पूरे दिन की याद आती है।

41.अब तो साजन के आने में..

अब तो साजन के आने में
देर नहीं होती है।
तब तो व्याकुल ''जिया''
मन परेशां
एक पल भी गीना जा रहा था।

तब तो मैं थी, पिया था,
हृदय था और वह थे
अब वह बदली सी मौसम
नजारा भी है, बदली बदली।

अब तो बिटिया की चिंता बढ़ी है,
बिटवा राजा बड़ा हो रहा है,
अपने साजन के सपन सलोने
रूप बँटकर अलग हो गए हैं।

बेशक है हमारे मोहब्बत
ये है पैरों की अपनी निशानी
वो मोहब्बत के पर्वत है ऊंचे
उनको छुने चला जा रहा है।

लगती माथे में बिंदिया
जतन से,
तेरी चाहत की काजल
नयन में,
देर तक, आस तेरी
गीत कोई मधुर, गा रही थी।

अब तो घर के कई काम है जो
थोड़ी देर जरा रुक कर आना
अभी चाय बनी है बाकी
अब तो मुन्नी के पाठ है बनाने।

अब तो साजन के आने में
देर नहीं होती
तब तो व्याकुल ''जिया''
मन परेशां
एक पल भी गीना जा रहा था।

लोग कहते हैं प्यार में कमी
ना किसी की,
उम्र कोई रुकावट नहीं है,
हम तो उम्र ही गुजारे हैं
मिलकर
जाने अपनी मोहब्बत
कहाँ खो गई है।

वह सब्जी वह भाजी
वह चटपटी की चाहत
वह मेवे मिठाई
वो फलों की थी चाहत
फुल के थे कई बार अरमान।

जिंदगी की थी पूरी कहानी
प्यार उसमें थी पनपी
संग संग जवां हो गई थी।
प्यार करने की उम्र ना हो
शायद
प्यार की उम्र बढ़कर बड़ी हो
गई है।

अब तो साजन के आने में
देर नहीं होती
तब तो व्याकुल ''जिया''
मन परेशां,
एक पल भी गिना जा रहा था।

अब तो लोगों की कथनी कहानी
बनी जिंदगी की रवानी
लोग कितने अनोखे हैं रिश्ते
हम अचानक बने कितने
क्या—क्या

चाचा के साथ बनके जो आई
वो चाची कहां जा रही थी
वो मामा का मामी बनाना
वो भैया का भाभी को लाना
पुत्र लाया 'बहू' घर की रानी।

आनंद, विभोर का वो जीवन
पथ मे कांटे मिट जा रहे थे
जिंदगी उसी दिन चली थी
उल्टे पाँव अपने घर को
चले जा रहे थे।

दूर अब तो निकल आ गए हैं
उनके पापा और मम्मी कहते
नहीं दुल्हन, है सपने संपत्ति
हम तो अपनी कहानी बताते।
हाँ यही रीत जीवन की सच्ची
फूल खिलते हजारों हजारों
एक तरफ से है मूर्छा के पाते
जो नया है वह एक दिन
पुराना पुराना बनेगा
गीत खुशियों के गाए थे हमने
प्रीत वो भी पुराना बनेगा
बीत जाएगा एक दिन
दिन नया अब सवेरा बनेगा।

42.ज्योति तुमने क्या किया

ज्योति तुमने क्या किया
प्रकाश रोशनी की देवी
द्वात्रि थी नए किरण की तुम
दिशा बदलकर देश बदल ली
मिट्टी की कीमत बदल ली।

नये नवेली परी जो
बन ठन कर घर में
आई तुम तो ज्योत
जगी, उम्मीद बड़ी
घर में खुशियाली आएगी।

चला निरंतर श्रम से घर
चलता रहा परिश्रम और सपने
संग संग तेरे, संग आस लिए
सब किया वही जो तुने कहा।

क्या ऐसा पाप हुआ हमसे
ज्योति को प्रकाश
मिल कहाँ चली
आलोक धरती पर चलते–चलते
चलता रहा तुम
वो मृत शव पर पड़ा रहा
तुम ज्योति बनी प्रकाश लिए
अंबर पथ पर निकल पड़े।

सारे सपनों को चुरा गई
मर्यादा सारे तोड़ गई
हृदय फुटकर बिखर पड़ा
चित्कार वेदना निकल गई
उम्मीद नहीं हमें करनी थी।

मल में जीने वालों को
ख्वाब सजाना मना है जब
तब हमने यह अपराध किया
सुना था कई कहानी में

भीम महाभारत वाले,
जब भीम बने,
तब सब की हिस्सा खाए थे
जब कोई रथि रथ पर चढ़ता
सारथी भी साथ निभाता है
अश्वों के रक्त शक्ति से
ऊँची उड़ान वह भरता है
जो गैरत हो, तुम में शेष अभी
संसार जलाना छोड़ भी दो
अब भी अपने सब तेरे हैं
अंजान शिखर पर चढ़े हुए
अवरोह राह का वरन को
तुम चयन करो निज का सुपथ
अशोक धारा का वर्णन करो।

43.मित्रता

लोगों को देखो
देखकर सीखा
कइयों के कुछ बड़े करीब
होकर मित्र बनना चाहते हैं

क्या मित्र भी बनने का होता है
?
क्या यह भी कोई बनावटी रिश्ता
है ?

हाँ आपके पास
हुनर हो तो
लोग करीब आएंगे
आप काम आ सकते हो
लोग मित्र बनते हैं।

कहीं तो व्यवसाय वस
मित्र बेमिसाल होते हैं।
किसी नजरया नजरिया
अगर किसी बिंदु पर मिलता हो
तो लोग मित्र होते हैं।

हिस्सेदार भी मित्र कहलाने का
हकदार होने लगते हैं
पार्टनर भी मित्र कहलाना
चाहने लगते हैं।
सघन दोस्त कहलाना चाहते हैं
राजनीति के लोग

एक साथ विभिन्न कारोबार
करते आपस में मित्र
कहलाना चाहते हैं।
भाई भाई है तो फिर
मित्र बनने की कहाँ
जरूरत होती है।
पिता पुत्र हो तो फिर

मित्र बनने की कहाँ
आवश्यकता होती है।
कर्म कर्मचारी सभी
सहकर्मी है तो फिर
दोस्ती की जरूरत कहाँ है।
सहपाठी हो तो
प्रति स्पर्धा होनी चाहिए
मित्रता की दरकार, कहाँ होती
है। पति–पत्नी हो,
उसमें पवित्र तो पृथ्वी में
कोई रिश्ता नहीं, फिर
वहाँ भी मित्रता की पुकार
कहां होती है।

अब तो शायद यह है
और यही है आप भी
कि मित्रता स्वजन्म
लिया एक ऐसा रिश्ता है
जिसे रिश्ते की डोर की
आवश्यकता नहीं होती।
यह तो बस भाव की
परिभाषा है।
जिसे ना स्पर्श की जा सकती
ना प्रमाणित किया जाए
और ना ही वजन खड़ी की जा सकती
बस दिल से दिल तक
महसूस की जा सकती है।

44.एक ऐसी गजल दे मुझको

एक ऐसी गजल दे मुझे
ए खुदा तू वजन दे मुझे
उसकी आंखों में पानी दिखे
ऐसी कोई नजर दे मुझे।

वो बहुत दूर रहकर भी मेरी
नजरों में बेबस नजर आ रही
हमने पहले भी आँखें चुराकर
उनसे बातें करी धीरे–धीरे।
ए खुदा तू हकीकत से आगे
हर रहम और करम से है आगे
उनकी तासीर नरम है भला क्यों
उनकों महफूज रखना खुदा
तुम।

एक बचपन मिला एक जवानी
साथ हमने किए बेवफाई
एक करमों के मालिक
मेरे रहे गुजर तुम
तेरी सोहबत मेरी जिंदगानी
एक ऐसी गजल दे मुझे
ए खुदा तू वजन दे मुझे।

जो कुछ लिखना, नाम से तेरे
मीर गजल बन जाती है।
लफ्जों की हर श्वेत पंख में
तुम ही तुम दिख जाती है।
जब भी आँखों से आँसू गिरे
कोई सीरत बनती है
दिल से देखा बार–बार तो
सूरत तेरी दिखती है।

एक अजनबी बनकर आए
नूर दिखा तो चेहरे में
आँखों में अल्लाह की नेमत
दिल में खुद बसाई थी।
ठंडी बर्फीली थी मौसम
रूह में अलबत पानी थी
रौशन दिल बेजार हो गया
तेरी अजब कहानी थी।

45.बरसात का मौसम है........

बरसात का मौसम है
मेरा साजन आएगा
सखियाँ देख लेना
मेरा बालम आएगा।

आते–आते शायद
संदेश भी लाएगा
ऐ हवा सुहानी है
एक गीत वह गाएगा।

ऐ पूर्वा चली बयार
पूरब से आएगा
खट्टी मीठी यादें
संग लेकर आएगा।

देखो काले बादल
उनको ही देख रहा
वह सजन सजीला
मन गीत वो आएगा।

सुंदर कलियाँ लेकर
वो फूल बनाएगा
देखो मेरे कुंतल में
बड़ा प्यार सजाएगा।

रिमझिम रिमझिम सावन
धन–धन धन धन बदरा
वह प्रीत चुरायेगा
और जीत बनाएगा
बरसात का मौसम है
मेरा साजन आएगा।

46. चंद्रयान–III दक्षिण ध्रुव

दक्षिण ध्रुव
यमदेव का घर
वसुधा का पुत्र
विक्रम आया
भारत माता का
परम तेज धारण कर वो
प्रज्ञान यान डी उठा लाया।

वसुधा का पुत्र
विक्रम आया।
चंदा मामा के घर आया
विश्वास नयन अनिमेष रहे
नाना के घर अपनी माँ का
संदेश नया देकर आया।

मामा के आंखों में पानी
एहसास देख रिश्ता आया
ऐ मातुल तुझे प्रणाम
तुझको माता ने याद किया।
यह श्रावण गीत सुना आया।

पवन रिश्ते, अनुपम बंधन
यह रक्षा पर्व का सूत्र समर्पण
करने मेरा भांजा आया
अपनी नानी का हिस्सा
अपने संग ले जाने आया।

अपनी माँ की धरती में
वनीता–सूता अधिकार प्राप्त है
पूरे ब्रह्त लोक में अब तो
झण्डा माँ का ले आया।

ब्रह्त की बेटी वसुधा माता
कन्या का हक अब लेने आया।
बित गए वो दिन जब
पिता का हक पुत्र बस पाएगा

अपनी ''वनिता'' वसुधा माता
का चाँद का, कन्या का,
हक लेने आया।

विजय गीत है
माँ के तिरंगे को मैं यहाँ उठा लाया
चाँद की धरती पर भरत दंड
यहलो गाड़ने मैं आया।

चंद्रयान पहले भी आया
लहराया और चला गया
मामा तुझको पुनः निमंत्रण
चंद्रयान देने आया।
फिर तेरा ह्दय नाम पिघला
तृतीय ध्वज तेरे आंगन में
विक्रम फहराने आया।
आया आया देखो आया
विश्व विजय अब कहलाया।

नहीं कहूँगा तुझे
कंस मैं,
क्योंकि माँ का दुलारा तू
बचपन मधु का पान कराती
चंदा मामा आया कहती
ना आया तू, ना आया
अब तो भांजा बड़ा हुआ
तो, विज्ञान पढ़ा,तुमको ढुढ़ा
माँ के कहने पर विशाल
चंद्रयान, भारत पुत्र ने बनवाया
ह्दय से ढूंढ़े, उसी पृथ्वी पर
राम मिले और श्याम मिले
तू तो बचपन का मामा था
ढूंढ़ तभी तो ब्रह्म लोक से
माँ के समुख में लाया।

छुटपन में ही माँ ने बताया
ऊपर चंदा मामा है
पुरुष वाद संरचना पाले
माँ के हिस्सा को पाया
नाना–नानी के आंगन का
तुइकलौता राज दुलारा

विक्रम मेरा नाम है मामा
सब का कृष्णा में कहलाता
देवकी पुत्र, यशोदा का लल्ला
वासुदेव का अंसज हूँ मैं
नंद का नंदन गोपाला।
याद करो तुम मेरी कहानी
अपना हिस्सा लेने आया
ढूंढ़ तभी तो ब्रह्म लोक से
माँ के समुख में लाया।

प्रयास प्रवासी ने भी किया
रूस की अथक परिश्रम थी
ढूंढ़े थे जिसने धुंधलेराह
कुछ हथियार जापान भी लेकर
ध्रुव पथ का संज्ञान लिया
हाँ वो अमेरिका भी नतमस्तक
माँ भारती के सम्मुख है।

विश्व ज्ञान का कोष कहाँ है
विश्व गुरु क्यों कर भारत है
यह चंद्रयान सीखला आया
माँ का आंचल ध्रुव लोकतक
भारत ही लहरा आया।

शिखर नहीं अवरूद्ध कर सके
सूरज ताप ना काम आया
निर्वात गगन को परम भेद कर
विक्रम चंद्रयान आया
ज्ञान नहीं विज्ञान नहीं
अब तो जग में
हाँ माँ भारती का प्रज्ञान आया।
नमन् करें माँ विशद रूपी को
अब विश्व माता बन आया
माँ का आँचल ध्रुव लोक तक
भारत ही लहरा आया।

भारत माँ के रज कण में
माता का वंदन बाकी है
है पुत्र विज्ञान सूत
तुम विज्ञानेश्वर कहलाओगे
पश्चिम के लोगों को देखो

विस्मित है,विस्फारित है
नमन रक्त से पुत्र तुम्हारा
वंदन करते, चरण पुष्प
और हृदय आभार जताते हैं।

गर्व करें, अब आज दिवस का
पृथ्वी, प्रार्थना करती है
हम भारत के धवल पुत्र है
मन में अभियान जगाया।
तृतीय ध्वज तेरे आंगन में
विक्रम फहराने आया है।
आया आया देखो आया
विश्व विजय अब कहलाया।

माता में कितनी शक्ति है
आज है हमने दिखलाया
विश्व सोंचता रहा पटल पर
झंडा लेकर मैं आया
अपनी नानी के घर देखो
हिस्सा लेने मैं आया।

मामा तुम माता के भ्राता
मातुक, ममत्व तुमसे ही है
आनंद, उमंग, उत्साह तुम्हीं हो
माँ से भी तुम प्यार हो
अब आगे यमलोक सुना है
दक्षिण पथ पर जाने से
एक दिन वहाँ भी माँ के आंचल को
लेकर संग लहराएंगे
अपनी नानी के घर देखो
मामा को लेने आया
माँ के हिस्से में खलल न करो
हिस्सा लेने मैं आया।

दक्षिण ध्रुव,
यमदेव का घर
वसुधा का पुत्र विक्रम आया
भारत माता का परम तेज धारण
कर वो प्रज्ञान यान
चढ़इठलाया।
वसुधा का पुत्र

विक्रम आया।
चंदा मामा के घर आया
विश्वास नयन अनिमेष रहे
नाना के घर अपनी माँ का
संदेश नया देकर आया।

भूमंडल पर विजय प्राप्त कर
विश्व विजेता कहलाए
अब सृष्टि विजेता बन आया
भारत के वीरों का विज्ञान
कहो गर्व से विश्व के वासी
भारत, भारत तू महान।

कहते थे अंग्रेजी वाले
वेदों की कथा पुरानी है।
संस्कृत कलीष्ठता की भाषा
यह भाषा बड़ी पुरानी है।
पर देखो विश्व बंधु भाई
विज्ञान पढ़े विज्ञानी के
गुरुओं को तुम नमन करो
कोई तो गुरु भूमि पर था
जिसने विज्ञान पढ़ाया था।
तब अणु परमाणु खोज हुए
विज्ञान के बीज सृजित हुए
और प्रतिफल विश्व समक्ष हुआ
सक्षम धरती के लोग हुए
भारत माता फिर श्रेष्ठ हुई।

47.तृप्ति की अभिलाषा

तुप्ति की अभिलाषा में,
राघव को रोज बुलाते हैं
नंदन वंदन सब करते हैं
कृपा निधान जग जपते हैं।

प्रति आलय दीपक हो
जगमग हो जग दिप्त
अलंकृत हृदय हो
करूणा से ममता,
से प्रति मान हर्षित हो।

श्रावण मास की जल धन हो
सृजन सृष्टि वसुधा की हो
नर—वानर से सज्जित धरती
है भानुमति अन्न देवी

हरिहर, हरिहर,
धरा के क्लेश
श्याम वर्ण है जनादेश
तुम शक्ति धरो
सुदर्शन लो संहार करो
मानस के विघ्न प्रणेता को

राखी तो एक पावन
संस्कृति का नाम
राखी रक्षा सूत्र है।
बहन का भाई की कलाई में
वैदिक सूत्र, वह विजय सूत्र
बलइयां लेती, प्यार जताती
वीरों के हाथों को
व्रज बनाती, प्यार जताती
राखी रक्षा सूत्र है।

48.समय की चार दीवारी में

समय के चार दिवारी में
जीवन का रथ रहता है
परिस्थितियों का पहिया है
अवसर का रहता है।

उलझती जिंदगी की
नई बेल तरुणाई है
सच्चे झूठे के वृक्ष
मन फल से बोझिल रहता है।

बीते क्षण के जलकण
पावक संग मिलकर देखो
दुःख धुँआ बनाते हैं
रथ आगे बढ़ता रहता है

रश्मि के साथ केतु
सारथी सज्जित है
षस्टाश्व का शक्ति संगम है
यह दृश्य विहंगाम है।

49.मैं शब्द बेचता हूँ।

मैं शब्द बेजता हूँ
कीमत क्या लगाओगे
शब्दों में भाव भरे
क्या भाव लगाओगे।

अंतर्मन की बातें
शब्दों में निकलते हैं
परिभाषित कर दो तुम
क्या अर्थ लगाओगे।

आंखों में छुपा दर्पण
जीवन के है दर्शन
है व्योम निःशब्द देखो
क्या दावा लगाओगे।

शब्दों में गीत छुपे
गीतों में छुपे हैं दर्द
हाँ दर्द का अर्थ लिखो
क्या अर्थ बताओगे।

महिमा मंडित तुम हो
या सत्यसाची तुम हो
डर में घटवासी के
क्या शर्त लगाओगे।

मेरे आँसू में गर्मी
क्या कह सी जाती है
हाँ रक्त उष्ण होती
क्या अर्थ लगाओगे।

मानव का मानव से
कोई भेद नहीं होता
बल बुद्धि लगा करके
क्या अर्थ निकलोगे।

पर्वत ऊँचे होते
नदिया गहरी होती
मध्य मध्य धरती
मद्धिम मद्धिम चलती
क्या तर्क लगाओगे।
सूरज चंदा के मध्य
रात और दिन चलते हैं
क्या अर्थ लगाओगे।

50.अपनों के दिए आँसू

अपनों के दिए आँसू
रह रह के छलकता है
वो शूल स्मरण अब भी
प्रति पल स्मरण अब भी।

गैरों ने परायों ने
जो संग निभाया है
हर आँसू स्मरण अब भी
प्रति पल स्मरण अब भी।

सबने कहा मिलजुल
अब राह पकड़ अपनी
अनिकेत हो गए तुम
अनिमेष शेष अब तुम।

वो भाई बंधु ही थे
जो अस्त्र हस्त घर थे
मानस को चक्षु पट पर
वो दृश्य सजीव अब भी
टूटे हृदय की व्यथा स्थिर अब
भी।

51.जो तुम कह रहे

जो तुम कह रहे
देश बिक रहा, छोटी–मोटी बात है ये
इंसान का ईमान बिक रहा
कागज के इन टुकड़ों में।

देखो अब तो चांद बिक रहा
दक्षिण के गलियारों में।
खेत बिके, खलिहान बिके,
तो छोटी–मोटी बात है ये,
जो तुम कह रहे
देश बिक रहा, छोटी–मोटी बात
है ये।

सागर की लहरें बिक चुकी
छोटे–छोटे टुकड़ों में,
बादल उमड़ उमड़ बिक गया
सीमा के गलियारों में।
गिरिराज का मुकुट बिक चुका
गंगा की सौम्यता बिक चुकी
राजनीति के आँगन में,
इंसा ईमान बिक रहा
कागज के इन टुकड़ों में।
देखो अब तो चांद बिक रहा,
दक्षिण के गलियारों में।

52.इश्वर तुम करूणा के सागर

ईश्वर तुम करूण के सागर,
ब्रह्मागढ़ा तुमने, नमन तुम्हें
पर क्या ब्राह्मण भी तेरी सृष्टि है ?
अन्यथा, ब्राह्मण में ही तुझे बनाया।

ईश्वर तुम करूना के सागर
क्यों जीव को शुद्र बनाया तुमने
जन्म से पूर्व क्या पाप कर्म
प्रारब्ध संकल्पना तेरी है।

प्रति पल करने का जीवन
क्या तुमने बनाया
कहा कि सेवक है
सेवाकई करें और करता रहे,
द्विज की सेवा शुद्र करें।

कितनी बार कलपता है
कितनी बार तड़पता है
अपनी जननी पर शरमाता है
अपने अनमोल जीवन कोसता
है।

एक ही अपराध
जिसका कोई अपराधी भी नहीं
निर बसिया के घर जन्म लिया
सत्कर्म क्रिया से वंचित
अभिशप्त सृजन शुद्र
अचेत चेतना मृत
बड़ा मालिन कालकूट।

वर्ण श्रेष्ठ निकृष्ठ होगा
ईश्वर विधान क्या कहता है ?
क्यों लिख लिख कर पाठ पढ़ाता
है
जब विश्व घट–घट कर वासी
है।

ब्राह्मण ने भेद लिखा
वेद की वाणी है
वो मुख जन्मा है
श्रेष्ठ वही
पद से पिसने जन्म लिया
वो शुद्र जीवंत पर सेवक है।

तब बोलो ईश्वर पूजन में
क्यों चरण वंदना होती है
ब्राह्मण हो या शुद्र
हरि के पद, को पराग
अर्पण करता।

सोडष संस्कार उल्लेखित है
पर शुद्र कहीं उद्धीत ही नहीं
ऋग सूक्त में वीरले ही
शुद्र कहीं भी दिखता है।

ईश्वर तुम करूणा के सागर
कौन पाप का यह विधान
एक जीव मनुष्य सृजन कर
ब्राह्मण शुद्र विभेद किया।

ईश्वर तुम करूणा के सागर
ब्रह्मागढ़ा तुमने, नमन तुम्हें
पर क्या ब्राह्मण भी तेरी सृष्टि है
अन्यथा निःसंकोच कर
ब्राह्मण ने ही तुझे बनाया है।

तेरा अस्तित्व बस इतना है
ब्राह्मण ने दिया आकर तुझे
वरना, तू अजर अमर होकर
साकार तू क्यों कर हो जना।

तेरा रूप है गढ़ता ब्राह्मण
अपने पाप मिटाने को
और सृष्टि पर सत्ता पाने को
शाम दाम और दंड के लिए
करता नीरीहो पर व्यभिचार कर।
ज्ञाता हो, विधाता हो,
ज्ञान दान कर, भीक्षा लेकर
जीवन का सत्कर्म तेरा
जो तथाकथित ईश्वर ने मुझे
इस हेतु ही सम्मान दिया।

तू क्षमाशील, त्यागी हो
तू ब्रह्त लोक के ज्ञानी हो
और करूणा के स्वामी हो
तब जाकर कहीं जग ने
तुमको ब्राह्मण होने का नाम
दिया।

निकृष्ट कार्य तुम करते
मानव विभेक तुम करते
निज दंग पाप कर
स्वयं खल को
ब्राह्मण पुकारा करते हो।

जिस ईश्वर की रचना
निज स्वार्थ किएनिर्लज होकर
अब उसे मुक्ति को जगत पिता,
जग के रचयिता बतलाते हो।

दुः दुष्ट लोग के पोषक
भूखंड के स्वामी बनते हो
अर्थशास्त्र के ज्ञाता बन
तुम अर्थवान बन जाते हो।

ए ब्राह्मण तुझे, वसुंधरा को
दिया ही क्या
खून पसीना शुद्र का है
अन्न उगाया शुद्रों ने
येवेद तेरा ही कहता है
पर धुर्त्त बनाकर
स्वामी बनकर लिखता है

ईश्वर तुम करूणा के सागर
ब्रह्मागढ़ा तुमने, नमन तुम्हें
पर क्या ब्राह्मण भी तेरी सृष्टि है
अन्यथा, ब्राह्मण ने ही तुझे बनाया है।

53.बचालो भइया, अपने हिंदुस्तान को

फिर कहता हूँ,
बचा लो भइया अपने हिंदुस्तान को
राम नाम की धार चली है
खड़ग के धरे श्री राम ने
खोज रहे हैं, कौन–कौन है
शम्बूक हिंदुस्तान में।

फिर कहता हूँ,
बचा लो भइया अपने हिंदुस्तान
को
एक नाम है शंकु राम है
ब्राह्मण युग का परिणाम है ये
चार वर्ण का पोषक है ये
शुद्र कर्ण का शोषक है ये
खड़ग के धरे श्री राम ने देखा
बौद्ववृहद्रथकहाँछिपा है
पूरे हिंदुस्तान में।

फिर कहता हूँ
कृष्णा राम है, राम कृष्ण है
गुरु वशिष्ठ और गुरु द्रोण है
कहां छुपा एकलव्य ध्यान में
फिर से अंगूठा काटेंगे
आए हैं प्रभु राम धाम में
भाई–भाई को मारेंगे।

बाली को सुग्रीव हतेगा
रावण को विभीषण मारेगा
क्यूंकि राम सेवा करनी है
खुन खुन को मारेगा।
जगत पिता का, करुणा सिंधु है
सागर को झूठ लाएगा
फिर कहता हूँ, बचा लो भइया
अपने हिंदुस्तानको।

54.बालक वो बड़ा प्रवीण

बालक वो बड़ा प्रवीण
सहज सब सीख रहा
जीवन के विद्या आलय में
खुद को खुद से तरस रहा।

आगे बढ़ता, अध्ययन करता
विज्ञान पढ़ता, चिंतन करता
वो हुआ निपुण, विज्ञान धनी
पर घर आता, विवश रहता है।

विज्ञान कक्षा के वैज्ञानिक
घर में आकर गृहस्थ
कर्मकांड मानते,सब नैतिक
पिता से डर, बनते धार्मिक।

पूरी कर शिक्षा का मनोरथ
प्राप्त किए रोजगार उत्तम
विज्ञान पढ़ाते, गृह आकर
धर्म का पाठ, सब करते कर्म।

पोंगा पंथी भी दिखने लगे
जब विवाह से संस्कृत बन बैठे
आने वाली दशा के उन्मुख
ईश्वर आराध्या नत् नत् समुख।

परिवार शांति सुख मांगी
पुत्र पुत्री कल्याण माँगता
धन वैभव उल्लास माँगता
जीता जीवन अनुदान माँगता।

विज्ञान तो विज्ञान ही है
पर ज्ञान का कोई मोल नहीं
जो समय सीखाता सबको है
वो धर्म–कर्म सब सहज सहज अनमोल नहीं।

55.एक पंक्ति अर्थपूर्ण.

एक पंक्ति अर्थपूर्ण
लक्ष्य गर्भित बढ़नी हो
तो कोई पंक्तियाँ यों ही
लिखनी पड़ती है।

स्थूल से सूक्ष्म को
प्राप्त करने में कई
प्रयास कर विफल भी
अनावश्यक होनी पड़ती है।
अपने पसंद की एक
बगिया लगाने में
जाने अनजाने कई
पौधे बोने–उखाड़ने पड़ती है।

अपनी मन की एक बात
तो कहनी हो तो जाने
कितनी इधर–उधर की
बातें करनी पड़ती है।

56.तेरे संग जीवन जीने की

तेरे संग जीवन जीने की
नहीं समय अभी था खत्म हुआ
लंबी राह अभी बाकी थी
नहीं उम्र पड़ाव का था।

अभी–अभी तो बगिया में
दो–चार रंग के फूल सजे
मनचाहा फल खाने को
वृक्षों का पालना बाकी था।

समय नहीं जो अधिक हुआ था
साथ–साथ अभी रहना था
बाकी थे कुछ सपने
अभी नींद से सोना बाकी था।

क्यों उबन हुआ, क्या दर्द मिला
मेरे फकीरेपन में,
तुम वैभवता दिखलाती रही
अभी इतने भी गहरी चालन थी
अभी–अभी तो, समुंदर देखना
बाकी था।

57.कंचों को समझ हीरा

कंचों को समझ हीरा
हम खेलते रहते हैं।
कागज के ही फूलों से
खुशबू हमें मिलती है।
घर के हर कोने में
है फूल तुझे देखा,
क्योंकि बगीचाओं में
अब फूल नहीं होते।

अभी यंत्र लगाकर के
हम जल पी लेते हैं
छत के ऊपर जल है
जो तल से जाते हैं
क्योंकि नदियों में भी
अब जल ही नहीं होते।
गाँव के सरवर में
मीठे जल दुर्लभ है
यह तंत्र बिकाऊ है
हर कण बिक जाता है।

लिख लिखकर अब देखो
हम प्यार जताते हैं
हम मित्र बनाते हैं,
और दिल भी लगाते हैं
नफरत भी जताते हैं
कुछ चिन्ह बता करके
क्योंकि जी दिलों में भी
अब प्यार नहीं होते।

ये बात पुरानी है
हर कण में खुदा बसता है
ढुढ़े हैं उसे फिर भी
मंदिर के दरवाजे
सब कहते हैं, दिल में, है खुदा
बसा करता
फिर मस्जिद में जाने क्यों,
यों जोर से गाता है।
यह बात हकीकत है

सब जान गए ऐसे
दिल विल में मानव के
अब खुदा नहीं होते।
गाँवों में खुशियाँ थी
सब लोग ये कहते हैं
हमने भी जाकर के
ये बात पता की थी
रोता हुआ बालक था
गाता भी शराबी था
अधनंगी औरत थी
भूखी हर माता थी।

अलसाई आँखें थी
प्रतीक्षा करती है
वो लाल मेरा जाने
कब वापिस आएगा।
वो शहर में बाबू है
कहते हैं पिता के होंठ,
आँखों में आँसू थी
फड़कती सीभुजाएँ थी,
बहना को भैया की
हरयाद सताती थी।

भैया तो शहर में है,
गाड़ी और बंगले हैं
अब वही तो कहता है
गाँवों में पहले सी
खुशियाँ ही नहीं होती।

दफ्तर खाने में हो
या अतिथि शालामें,
तस्वीर लगे होते
दो बैलों के साथ
वो किसान चला जाता
बच्चों को बताते हैं
ये किसान है कहलाते
क्योंकि अब गाँवों में
किसान नहीं होते।

माता की कुंठित है
पिता भी क्रोधित है
भ्राता भी लज्जित है
अपने ही कर्मों से
अपमानित होकर के
हर रिश्ता रोता है
पत्थर के हृदय में तो
अब प्यार नहीं पलता।

गंगा का पानी है
जो स्वर्ग से आता है
बड़ा निश्चल होता है
कल कल दरिया सा है
जो पास गया उसके
सब सुख गई बातें
है धर्म की गंगा ये
सब लोग बताते ये
पर सुनी दरिया है
सब रोग यहीं पलते।

कंचों को समझ हीरा
हम खेलते रहते हैं
कागज के ही फूलों से
खुशबू हमें मिलती है
घर के हर कोने में
है फूल सजे देखों
क्योंकि बगीचाओं में
अब फूल नहीं होते।

58.शिक्षा विश्वास की जननी

शिक्षा विश्वास की जननी
हुआ करती थी,
आशा उम्मीद की किरण
हुआ करती थी,
युवा चक्षु में स्वप्नों के द्वार
हुआ करती थी।

पिता का पुत्र पर अभिमान
हुआ करता था,
माता को रोशनी की उम्मीद
हुआ करती थी,
परंतु, शिक्षा से शिक्षित को
विश्वास नहीं होती हैं,
आशा उम्मीद की किरण
तिमिर भरी होती है,
युवाओं के स्वप्नों को
तार–तार करती है।
पिता को शिक्षा से
उम्मीद भटक जाती है
माता को कर्म पर भी
आभार नजर आता है।

हे, जग जननी शिक्षा
तुमको किसने कलंकित है किया,
तू तो दान की पात्र भी
अब व्यापार की वस्तु है,

निर्धन की शिक्षा निर्धन सी
धनवान की शिक्षा अन्य सी
यह विभेद नहीं तू करती थी

लक्ष्मी तो शारदा पुत्रों की
वरदान हमेशा होती है,
पर अब लक्ष्मीपति कहते हैं
शारदा पुत्री शिक्षा,
उनके ही घरों में पलती है।

अब शिक्षा से शिक्षित को
विश्वास नहीं होती है,
आशा उम्मीद की किरण
हुआ करती थी,
युवाओं के सपनों,
को तार तार करती है।

59.सौ बार प्रयास निरंतर से

सौ बार प्रयास निरंतर से
सौ बार सफलता नहीं मिलती
है रश्मिरथी, हे वीर पुत्र
सौ में से ही,
एक बार सफलता मिलती है।

अरी सफलता
तुझे ढूंढ़ते,
मतवाले योगी बन जाते है
पैरों से पायल टूटते हैं
और परमवीर भी
पथ में तेरी
सहज घुटने टेकते हैं

साधक तेरा, विश्वास लिए
नभ में प्रकाश के आस लिए
रक्त बूंद दे जाता है
और सफलता भी उससे
प्रसन्न हो,गल माल
उसे पहनाती।

60.सुंदर सी कली जब भी

सुंदर सी कली जब भी
पर्वत के शिखर में हो,
भँवरें का कुंजन गीत
उत्साहित होता है।

खामोश हवा में भी
हिलने की तमन्ना है।
सूखे पत्तों में भी
हरियाली ढूंढ़े है।

है चार दिनों की आस
प्यासा है चकोरा है,
शीतल हिमाकर से
मिलने की शिकायत है।

जग वालों का डर है
अपने ही रुठे हैं
पर आप लगे मन में
एक आग लगी तन में।

हाँ तुमको पाना है
अब हमने ठाना है
दिल तेरा दीवाना है
दिल तेरा दीवाना है।

मासूम कली तुम हो
हर गम से बेखबर हो
पर याद में गम तेरा
तेरे गम की यादें है।

जितना भी मिलूँ तुमसे
दिल उतना ही रोता है
ये इश्क में जाने क्यों
इतना कुछ होता है।

अब खुद से बेखबर हूँ
तेरा ही तसब्बुर है
तेरी मीठी यादों में
दिल खोया रहता है।

जान क्या मौसम है
ये कौन सा रूत आया
ये कौन महीना है
जो सावन लगता है।

बागों में बहारें हैं
क्यों मौसम सूखा है
तेरी याद जो आती है
सूखे पत्तों में भी
हरियाली छाती है।

चंदन सा बदन तेरा
कुमकुम जो महकता है
इस हवा ने जाने क्यों
मछुवे की खुशबू है।

हाँ मादक करता है
हर होश गिरेबाँ को
आँखें जो कटीली है
पर जाम छलकता है।

हाँ इश्क यही देखो
आगे जो बढ़ता हूँ
अब मौत नजर आती
जो रूकुँ सफर में तो
जीवन थम जाती है।

61.यौवन प्रिया, मृगमयी चपला

यौवन प्रिया मृगमयी चपला
गहरी आँखें, कोमल पल्लव
बेसुध है असर, अचरज
फिर भी जाने क्यों किससे
कुछ दवी जुबां से अपनी
कुछ कहना चाहती है।

वह हँसती है तो बे मतलब
गाती भी है तो बेमतलब
पर भीतर है, दर्द भरे मन में
मानो उपहास ही खुशियाँ है।

तेरी तो समझ पड़ी उसको
उसका अंतर्मन कोई छू ना सका
कालीधुंधराली दृश्यों में
ओझल ही उसका जीवन है।
फिर भी जाने क्यों किससे
कुछ दबी जुबां से अपनी
कुछ कहना चाहती है।

बचपन की लंबी पहरों में
कुछ खेल खिलौने देखी थी
सखियों के संग ओसारे में
कुछ खेल नवेले खेले थे।
पर खेल–खेल में जीवन के
स्वादों को चख कर देखी थी।
फिर भी न जाने क्यों किससे
क्यों दबी जुबां से अपनी
कुछ कहना चाहती है।

गुमसुम गुमसुम मन मंदिर में
नव कीर्तन रोज सुन लेती थी
अपनी बातें मन में रखकर
औरों की कथा श्रवण करती
शंकित होकर, चिंतन करती
थोड़ी पाती, हँसती गाती
जीवन पथ पर बढ़ जाती थी।

वो जितनी सुंदर रोती थी
सुंदर उतनी हँस लेती थी
रोने गाने में भेद भला
वो पगली कहाँ कर पाती थी,
फिर भी जाने क्यों किससे
कुछ दवी जुबां से अपनी
कुछ कहना चाहती है।

नित्‌आती थी घर से अपनी
निपट सपट वो जाती थी
औरों की कहां सुन पाती थी
बस अपनी कथा सुनती थी
वो पगली थी, पर चंचल थी
सबसे बातें कर मन के रस्ते
खुशियों के फूल गिराते थी।
तब अंतर्मन आलोकित मन
निशा प्रभा के अवतरण लिए
उल्लासित करते, पर जीवन
तमस निद्रा,घनघोर गगन,
फिर भी जाने क्यों किससे
कुछ दबी जुबां से अपनी
कुछ कहना चाहती है।

62.राखी बड़ा ही प्यारा त्योहार

राखी बड़ा ही प्यारा त्यौहार
धागे का रिश्ता उपहार
अपने–अपने अग्रज अनुजों
के लिए करती व्रत,

बनता रिश्ता रेशम सा
हृदय में सृजन होते, कई
उद्‌गार
बहुत गर्व से भाई का कलाई
चूमती बहन, देती राखी
भाई अपने हिस्से से देता
एक खूबसूरत उपहार।

बहना खुश हो जाती
मानो मिला उसे घर बार
पिता की संपत्ति का
पूरा–पूरा अधिकार।

थालियों में चंदन, अक्षद
रौली, मिठाई, दिया कपूर
पर कोने में थाली के है
कुछ अलग राखियाँ
विभेद वाली।
जो उन भाइयों के लिए भी है
जो अगली घर में रहते हैं
पीछे बाजू में रहते हैं
बहना तो बहना होती
पर हर राखी एक जैसी हो।
यह संभव शायद नहीं हुआ।

निज सहोदरों का महंगा
दिखने में भी सुंदर
विभेद वाली राखियाँ
सामाजिक दिखती, बस
राखियों के तरह, होनी चाहिए।
राखी की थाली बटीं रहेगी
पर, शायद चंदन छोटा होगा
पर धागा तो धागा है
वो रिश्ता बाँधता है
वह प्यार बाँधता है
तो भाई–भाई में फर्क नहीं
फिर धागो के रंग क्यों
चमकीले फीके लगते हैं।

63.गाँधी की वाणी कहती है

गाँधी की वाणी कहती है
जब तक अँधेरी सड़कों पर
नारी ना अकेली चल सके
तो कैसी आजादी, कैसा यह अपना देश।

विकास के रश्मिरथी,
या कुरु क्षेत्र गीता
जब बिल खेगा दुध–दुध
कोई नन्हा बच्चा
तो कैसी आजादी
कैसा यह अपना देश।

जब तक उन्नाव, कठाव
मणिपुर दोहराएगा
शक्ति की पुत्री, न्याय माँगती
ठोकर खाएँगी कृष्णा नहीं आवेगा
तो कैसी आजादी
कैसा यह अपना देश।

माथे पर मलवा ढोवेगा
शिक्षा में वंचित होवेगा
बेगार बंधु जब भुख प्यास
से तड़पेगा क्रांति क्रांति
केस्वर लहराएगा
तब कैसी आजादी
कैसा यह अपना देश।

रामराज का स्वप्न दिखाकर
मंदिर भव्य बनाएगा।
देश का पहला, न्यायी हो
ड्योदी पर जाएगा तो
गोमूत्र गंगाजल से शुद्धि
यक्ष का अनुष्ठान होवेगा
क्योंकि वह पंचम है
तो कैसी आजादी
कैसा यह अपना देश।

64. देखो आँसू ढलक रहे

देखो आंसू ढलक रहे
दिल का दर्द
टूटकर मोती का रूप लेकर
देखो आँसू ढलक रहे।

दिल में थोड़ी बोझ पड़ी होगी
मन में थोड़ा पानी पड़ा होगा
पत्थर नहीं दिल
उसमें थोड़ा दर्द भरा था
फुटकर वह गरम–गरम आँसू
बन रहे
देखो आँसू ढलक रहे।

अपना हाथ लगा दो
थोड़ा नरम बना दो
थोड़ा सहज बना दो
दिल में चोट लगी थी
पलके भीग गई थी
वहीं आँसू भी बन गया
आँखों में नारह सका तो
देखो आँसू ढलक रहे।

65.भारत क्यों तपता है

''भारत'' क्यों तपता है ?
जब ज्ञान सुधा का विचरण होता
सूरज की किरणों का प्रवेश सुगम होता
हवा ना करती भेद, स्वच्छ आचरण करती
सरस सरिता भूतल पर निर्बाध,वेग मय होती
तब फिर भारत क्यों तपता है।

जब ज्ञान चक्षु खुला पाता है
वेदो पर निषद सामान्य हो पाता है
काव्य ग्रंथ शुद्र पढ़ पाता है
अपनी दुर्भाग्य लिख पाता है
तब फिर भारत क्यों तपता है।

तपता भारत, जलता मानव
विफर विफर कर रोता है
वो कहता है, कौन है ईश्वर
क्यों इतना अन्यायी है
क्यों सृष्टि में आग वो बोता है
इसलिए तो भारत तपता है।

जिसका जन्म ईश्वर से है
मृत्यु भी तो ईश्वर से है
फिर क्यों ईश्वर अन्यायी है
पुरुष संहिता का ईश्वर
विभेद बिज क्यों बोता है
इसलिए तो भारत तपता है।

क्या ईश्वर के काया का मल,
निकृष्ट संचित निष्कासित होकर
यह शुद्र बनकर जनमता है
सेवा का धर्मदास,बन पृथ्वी पर आता है
इसलिए तो भारत तपता है।

शिक्षा नहीं, संस्कार नहीं,
संपत्ति पर अधिकार नहीं,
वस्त्र नहीं, भोजन भी नहीं,
फिर क्यों कर मानव कहलाए
बिना पूँछ का जीव जगत में
पशु मानव बन जाता है
इसलिए तो भारत तपता है।

ये जनपद का निर्माण किए,
नृपभूप स्वामी सकल
नहीं कोई ईश्वर आया
सब कपटी मानव वृंद ही था।
न्याय संहिता मनु लेकर
पृथ्वी पर नव अवतार हुआ
लिखी बातें जब पढ़ पाया
अवतार जो तुने गढ़ पाया
फटा हृदयसे रक्त, आँखों से चढ़ा आया
इसलिए तो भारत तपता है।

पीछे बाँधे झाड़ू,
आगे लटकी हंडिया
यह शुद्र पुरोधा का रूप बना
नंगा है बदन,
पत्ते हैं ढके, निज अंगों में
यह देख, कलेजा फटता है
इसलिए तो भारत तपता है।

हर्यक आए पितृहंता
शिशुनाग वंश आरूढ़ हुआ
फिर नंद वंश ने राज किया।
जब दलित कहार पिछड़ों ने
राजपाठ का भार लिया
तो राजा और राजपुत्र का वंश बना
राजा था वो क्षत्रिय था गढ़ा नया एक वंश
राजनीति कर डाला, अस्मिता मिटी
सुदासब्रह्त कहलाया
दास राज्य की युद्ध कल्पना
गढ़कर बातें बात बढ़ाई
कहा समुद्र मंथन हुआ
जब शेषनाग था डोर बना

मंदराचल पर्वत, गर्म ग्रह का
मंथन कर अमृत पाया
विष्णु ने पिया
और विष, शिव के हिस्से में जाता है
इसलिए तो भारत तपता है।

अवतार वाद की कथा निराली
राम आए, राजा भी बने, त्रेता
युग में
समस्त पृथ्वी के नर भू–पति बन
आए
द्रोह तो है, क्यों मुनि वर की
आज्ञा सुनकर, सम्बुक की हत्या
कर डाली और कहा उसे प्रभु ने
धर्म रक्षा के लिए, हर लिया जो
उसका प्राण कथा को नहीं
लिखा
पर जब भी व्यापक हो पाता
निस्तेज गर्व का हो जाता
नावेद बचा ही पाता है
ना काव्य बचा ही पाता है
इसलिए तो भारत तपता है।

द्वापर आया, कृष्ण आए
मनमोहन रूप, मोहन प्यारे
माँ का लल्ला, राधा का प्यार
कंस वध प्रमाणित करता है
पर क्यों चुप है, रचना
''महाभारत'' अग्नि युद्ध के षड्यंत्र कराकर
अश्व मेघ नहीं संपन्न होने का
विश्व प्रतिशोध वो लेता है
कौरव पांडव दोनों कुल को
सर्वनाश राह दिखलाता है।
क्या हुआ जो पांडव राजा नहीं बने
इतनी षड्यंत्र क्या उचित वहाँ
कर्ण सूत् अनुचित संतान
वह वीर वर्ती, परशुराम ने
क्यों अभिशप्त किया,

द्रोपदी के चीरहरण में क्यों
भीम – द्रोण, का मस्तक झुकता है
इसलिए तो भारत तपता है।

तपता ही भारत, आजभी है
क्यों सोमनाथ तोड़ा उसने
तपता है भारत, आज भी है
क्यों नालंदा तक्षशिला,
जला कर राख किए।

बोद्धों की हत्या लाखों में
क्यों सिंधु घाटी से मिलती है
क्यों मिलते हैं साक्षात जगत में
गौतम को निर्मूल किया गया
भारत के पावन गाथा से
सुन सुनकर धरती फटती है
आकाश में आग लग जाती है
लज्जित भूमंडल होता है
इसलिए तो भारत तपता है।

बृहद्रथ को मारा, सुंग आए
वो पुष्य मित्र हत्यारा था
जो राम–राम कहलाता था
विदर्भ युद्ध प्रतिष्ठित कर
की यवनों से रक्षा भूमि की
इतिहास दबाकर लिखता
वो कथा बदल कह देता है
बृहद्रथकी हत्या, हत्या नहीं
वो वध करना पड़ जाता है
इसलिए तो भारत तपता है।

सातवाहनी सत्ता में,
ब्राह्मण, परशुराम कहलाता है
और क्षत्रियों की हत्या कर कर के
भूखंड विहिन कर पाता है,
फिर अगले ही कुछ कालों में
क्षत्रिय,ब्रह्त का रक्षक बनकर
श्राजाराम कहलाता है
इसलिए तो भारत तपता है।
गुप्तों ने झेला हुणों को
हथियारों, को लुटेरों को

गंधार प्रदेश के केवल 1600 स्तुपच
हुणों ने अकेले दाह दिया
नालंदा, कौशांबी, तक्षशिला को
जलती आग में झोंक दिया
वह आज अभी तक बुझा ना सका
प्रतिशोध अभी तक हो ना सका
इसलिए तो भारत तपता है।
लज्जा की बातें और सुनों
ब्राम्णि वीरों, पृथ्वी के देव
हम दक्ष तुम्हारे पद रज के
बाल विवाह, सती प्रथा
का यात्रा के परियाचक है
वो तुर्क लुटेरा आएगा
घर में घुसकर ले जाएगा।
वह मुगल बादशाह आएगा
लज्जा को उठा ले जाएगा
इसलिए जला दो विधवा को
विवाह कर दो शिघ्र उसे
हिंदुतो मुगलों की गाली
भारत भूमि को दे डाली
और तेरा शिर मोर बना
तू हिंदू हिंदू चिल्लाता है
इसलिए तो भारत तपता है।
तभी निराश, मन रोता है
रो रो कर भर्त्सना करता है
क्यों इंग्लिश वालों को हमने
इस देश में रहने नहीं दिया
जब आर्य रह गए पंडित बन
जब तुर्क मुगल नवाब बने
तो वो भी घुल मिल जाते ही
अन्यायी की मन में विष भर कर
कलश फूट समाहित हो जाता
ना कोई SC होता ना ST कोई
कहलाता, जनरल होकर आज तलक
भारत को ना, कोई लूट रहा होता
आज भी शोषण ही हो रहा
कल भी तो शोषण होता था।

स्त्री को नंगा कर कर के
मणिपुर देश का शान बने
इसलिए तो भारत तपता है।
कम से कम लोग न्यायालय में
विद्यालय में, थाना के घर में
मदिरालय में, कारागार में,
बाजारों में, गलियारों में,
बस अड्डे, रेल पड़ावों में
जलता मानव, बँटता क्लास।
इसलिए तो भारत तपता है।

आज भी अंबर रोता है
धरती बेबस हो जाती है
माता कुंठित मन से कहती
पुत्र मेरा भी पुत्र ही है
वह माता मेरी ही जैसी
वो गर्व शान से रहती है
मैं लज्जित हो रह जाती हूँ
पिता का कलेजा फटता है
विष देख वो रोता है
और इन्हीं भिन्नता के मारे
आज भी भारत जलता है
आज भी भारत तपता है।

66.डरना नहीं

डरना नहीं,
सुनना नहीं, हो सके तो
चुप रहो
कहना नहीं।
अपनी जुबाँ से
बात अपनी मत करो
कहने दो उनको
वो नए है
सुनना उन्हें, आता नहीं
करना अभी सीखा नहीं
जोशहै, जिंदा
यही तो चाहिए।
हम पृष्ठ बनना चाहते
वो मुखर होना चाहते
ज्वाला है ये
डरना नहीं, अग्नि नहीं
यह क्रांति है
कहने दो उनको।

तुम करो
तुम धीर हो
रणधीर हो
गंभीर हो
प्रभाव ही तो है
जो हम बोलते हैं
तुम अभी बस चुप रहो
तुम गीत हो
क्रांति से करते प्रीत हो
नेपथ्य की भाषा सुनो
वो भी वीर है
ललकारते,चिढ़हाते
पर, आक्रमण तुम्हीं कहोगे

अंत में, संग्राम होगा,
सब लड़ेंगे,
डरना नहीं, आगे बढ़ेंगे,
हवा में, तूफान
तुमने देख ली है
बारिश के मौसम में
ब्रजेंद्र को छुआ तुम्हीं ने।

युवा को जीवन
वृद्धो को अधिकार
वाले युद्ध भी
तुमने लड़ी
हम साथ है
कहते सभी तो
वक्त की पहचान कर
संत को सिद्धि मिले
यह हक है,
अधिकार जो तेरा है
कर्तव्य भी हम सबका है
गांडीव मिले तुमको
कहीं रण है अभी
बाकी पड़े, लड़ना पड़ेगा
प्रण करो, हम सब के हो विश्वास।

गुरु का प्रतिशोध लेना है, तुम्हें
जलना पड़ेगा।
जंगल में जब भी आग हो
आगे तुम्हें होना पड़ेगा।
डुबना होगा तुम्हें,
जब भी समंदर चांद को छूने
लगेगा
बढ़ तुम्हें ही, सबकी खातिर
कंठ में विष, फिर तुम्हें पीना
पड़ेगा।

क्या मिला, क्या खोएगा
करते रहे कायर
युधिष्ठिर तुम ही,
ग्लानि का रक्त पानकर
जुड़े सजाने है तुम्हें

गीता की रीता के व्रती तुम
युद्ध के आदि हो तुम
तुम हो, तभी तो सब कहेंगे
दो उन्हें एक छूट खाने की
क्योंकि, जो तुम तो कह चुके हो
कर्म से परितोष
तुम तो पा चुके हो
युद्ध में अर्जुन तुम्हीं हो।
भीष्म है अमर जो उस तरफ
फिर भी विजय का आशीष, तुमको है दिया
द्रोण भी लड़ते दिखे
पराजित किसकी हो, जो पूछा
तो कहा अर्जुन की हो
महोदय, कुंभकर्ण भ्राता के लिए
संग्राम करता,
मन विनय से मानता
सीता हरण दुष्कर्म है
श्री राम कोवंदन नमन
इसलिए, डरना नहीं, सुनना नहीं
हो सके तो चुप रहो, कहना नहीं।

67.प्रभारी भी अजीब जीव होते हैं

प्रभारी भी अजीब जीव होते हैं
सबके थोड़े–थोड़े भार से नीचे
दबा, बड़े भार का हारी
वह प्रभारी,
जब भी किसी बंदे को थोड़ा
अपना भार लेना पड़े
तो कहता, ये प्रभारी किस काम का,
Biometer नहीं था, तब भी
प्रभारी दुखी था
क्योंकि हर किसी को
समय बताना पड़ता था
तो इन्हें लोग औकात बता देते थे
Biometer है, तो भी प्रभारी दुखी है
क्योंकि जब Biometer ही है
तो, प्रभारी से क्या कहना पूछना
यह जानना,
थोड़ी बहुत मतलब भी खत्म हो गई।

उसी तरह, संधी होना
संघ का प्रभार लेना
सब कहते भी है
जब हमें ही ऑफिस जाना पड़ेगा
अपना काम करना पड़ेगा
ऑफिस का सुनना पड़ेगा
तो यह संघ कैसा
किस काम का
जब लक्ष्मी ही देनी है,
तो यह कैसा जयकार
प्रभारी कहीं सुखी नहीं है
सबके भारी भरकम लोगों के
बड़े भार से दबा
दुबक कर कोने में

क्योंकि प्रभारी पदाधिकारी भी
अधिकतर प्रभारी को ढूंढता
काम पर काम और
काम की ड्यूटी बताता
जो ना कर सका तो
प्रभारी कैसा, प्रभारी कैसा।

जाति को उसका प्रमाण न दिला सका,
छात्र को इसकी वृत्ति न दिला सका,
छात्राओं को सावित्री ना बना सका,
स्वच्छ भारत ना रह सका
बेटियाँ ना पढ़ सकी
अपने देश की माटी ना चढ़ी
बे पढ़ो को पढ़ा ना सका रूआर में
तो किस काम का था प्रभारी
यह कैसा प्रभारी, यह कैसा प्रभारी ?

भगवान तो अपने धाम में है
अवतार पृथ्वी के प्रभारी
अतः ना राम धनी रह सके
न कृष्ण सुखी रह सके
अतः प्रभारी भूल पद के अवतार
हैं
सारे अधूरे काम करने को
धरती में अवतार लेना और
कहीं का भी हो प्रभार लेना,
बराबर ही है,
अतः अवतार कहीं सुखी नहीं है
प्रभारी कहीं सुखी नहीं है।
प्रभारी कहीं सुखी नहीं है।

68.देखो, पागल गीत गा रहा

देखो पागल,
गीत गा रहा, गाकर थोड़ा हँसता है
जाने कितनी यादें लेकर,
सब कुछ खोकर एक अकेला,
देखो चलता रहता है।
मौज मनाता, आगे बढ़ता
दिल में कुछ नहीं रखता है
दिल पर रखा, दिल के दर्द को
तभी तो पागल फिरता है
देखो पागल गीत गा रहा,
गाकर थोड़ा हँसता है।

किसकी किसकीयादें लेकर
किससे किससे कहता है,
कोई नहीं है, सुनने वाला
क्योंकि पागल कहता है
देखो पागल गीत गा रहा
गाकर थोड़ा हँसता है।

दिल टूटा, फरियाद नहीं थी
साथी भी अब याद नहीं थी,
सूरत में मुस्कान ढूंढ़ता
आधी हकीकत बाकी थी
देखो पागल गीत गा रहा
गाकर थोड़ा हँसता है।

जाने कितनी यादें लेकर
सब कुछ खोकर एक अकेला
देखो चलता रहता है।

कहता सबसे, देख आ रही
प्यार वो मुझसे करती है
मस्ती है बेशक वह मुझपे
दीवानी वो पगली है
देखो पागल गीत गा रहा

गाकर थोड़ा हँसता है
जाने कितनी यादें लेकर
सब कुछ खोकर एक अकेला
देखो चलता रहता है।

मुश्किल से भोजन मिलता है
कुड़ा कचड़ा खाता है
पीने को जल कहाँ मिलेगा
दिल के अगन बुझाने को
गंदे जल वो जब पीता है
यार की सूरत दिखती है
गद्दार की सूरत दिखती है
देखो पागल गीत गा रहा
गाकर कर थोड़ा हँसता है।

किसी की चुन्नी, किसी की बिंदिया
आँखों में किसको ढूंढे है
जिसको उसने प्यार किया है
वही सुरतिया ढूंढ़े है
शायद उसने, कहा था पागल
इसलिए वह पागल है और
पगली पगली ढूंढ़े हैं
देखो पागल गीत गा रहा
गाकर थोड़ा हँसता है
जाने कितनी यादें लेकर
सब कुछ खोकर एक अकेला
देखो पागल चलता रहता है।

69.सुनो, हे अर्जुन

सुना है अर्जुन
समर शेष है
गांडीव हाथ में धरे रहो।
पापी मर गए, पाप रह गया
अभी सखा को साथ रखो।
NPS मार अब सब ने देखा
NSDL अभी तो जिंदा है
वृद्धो को सुख चैन मिल गया
युवा को जीवन, अधूरा धरा
वंदन करता वीर तुम्हें,
सुनो है, अर्जुन
समर शेष है
गांडीव हाथ में धरे रहो

जीवन अपने विरुद्ध
एक युद्ध है
नहीं किसी से है लड़ना
अपने मन से
अपने जन से
अभी लड़ाई बाकी है
OPSगर जो स्वप्न बना है
उसे सुनिश्चित होने तक
सुदर्शन हाथ में धरे रहो
समर शेष है अभी सखा के
हाथ हाथ से धरे रहो
कृष्णार्जुन को नंदन वंदन
अभी तो दीपक जलने दो
सुनो है, अर्जुन
समर शेष है
गांडीव हाथ में धरे रहो।

70.न लिख सके, मेरे गीत

ना लिख सके, मेरे गीत
तेरे आँखों की पानी को
कर दो क्षमा कर से
नमन वंदन परम मनप्रीत।

वसु का ज्ञान, वसुंधरा को
सप्त ऋषि का प्रयान असीम
अंबर चकित दृष्टि अनिमेष
क्या जाने कि कहता क्या
नमन वंदन परम मनप्रीत।

ये तो तक्ष की शिला
मगन मन मीत की लीला
निःशब्द दृग चंचल
बड़ा विश्राम की इच्छा
नहीं क्यों लिख गया आगे
नमन वंदन परम मनप्रीत।

71.इंसान के चरित्र–इमान की

इंसान के चरित्र ईमान की
कोई किताब नहीं बन सकी
जो पढ़ सके कोई
किसी के भीतरी हृदय को

पशु ने इनाम का प्रतिमान
गढ़ते स्थापित करते लोग
क्योंकि उसके धर्मों इमान पर
हर कोई यकीन करता है

आखिर इंसान मनुष्य जीव
इमानी क्यों नहीं बन पाता ?
क्यों नहीं मिशाल बन पाता
अपने जमीर के जिंदा होने का
मशला दिगर है कि इंसान
इंसान है कई कर्मों का बोझ है
काफिले और कारवाँ बनाने की
नई दुनियाँ बनाने का जिगर।

पशु तो पशु है
भोजन मिले तो ईमानदार
आशियाना मिले तो ईमानदार
थोड़ा प्यार मिल जाए तो
ईमानदार।

72.उन मुर्तियों को देखो...

उन मूर्तियों को देखो
कैसे एक और अभिभूत
होकर, प्रेम सागर में
आंखें बंद कर ली है।

देख लो उन तस्वीरों को
कृष्णा राधे की
तस्वीर मगर एक में एक
भींचे हैं आँखें प्रेम सागर में।

वहाँ तो शिव का मंदिर है
जहाँ माता अपर्णा
शक्ति बनकर, चंद्रशेखर
संग बैठी, प्रेम सागर में।

जगत में शिव ही प्रेम है
और कृष्ण ही प्रेम है
उमा भी प्रेम है
राधा भी प्रेम है।

प्रकृति के ये रूप है
इश्वरीय गीत के प्रतिप
साधक के लिए साध्य
हाँ, यही तो प्रेम सागर है।

73.जब भी थक कर

जब भी थक कर,
हार मानकर
वापस घर में
आता हूँ।

पिता की याद आ जाती है
उनकी आँखों में खुद को
जब भी डूबा कर देखता हूँ
हर बात उनकी फिर
दिख जाती है।

जब बेसहारा होता हूँ,
शक्तिहीन होता हूँ
वो आँखें जो आज
भी जिंदा दिखती है मुझे
चलने की हिम्मत देती।

हाँ वह बेजान है
तुम्हारे और उसके लिए
पर मुझे उसमें पानी
दिख जाता है
पिता के प्यार वाली।

74.घर बताता है कि.......

घर बताता है कि इसमें कौन रहता है
इसके मुख्य द्वार का शीला पट्
है नाम लिखा वजूद बताता है
कि इसमें कौन रहता है।

दीवारों के चमक, बाहर वाली
फिर बड़ा तोरण द्वार
रंगीन चमकती दीवारें
रहने वालों का नाम बताती है
कि इसमें कौन रहता है।

अंदर बाहर होती गाड़ियाँ
चमचम करती वेग से
शीशे बंद, बत्तियाँ जलती
बता रहे, कौन चलता है
द्वार का दरवान बताता है
कि उसमें कौन रहता है।

दीवारों दर पर रखी
टूटी चप्पले, फटे गमछे
और करनी बसली,कुदाले
टूटे किवाड़, दिखते छिद्र
और सुबह होते, पुकारता मलिक
स्वयं बताता, एहसास कराता
की इसमें कौन रहता है।

बच्चों के किलकारियाँ
लोरियां सुनाती गाती
गृहणियों की पुकार
आजकल और आज की
चिंता से लिपटी आवाज
दीवार भेदकर बाहर आकर बताती
कि इसमें कौन रहता है।

टूटे बर्तन हो, पर बिखरी
किताबें भी अगर दिख जाए
तो, समझाती की, उम्मीद वाले
भी रहते हैं, यहाँ गर
मजदूरी के हथियार दिखे
तो समझती और चित्कार करती
कि इसमें कौन रहता है।

हाँ सच ही तो है
किधर दुख बताता है
की इसमें कौन रहता है।

75.दिए जल गए

दिल जल गए
लतिकाएँ जल उठी
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

हरियाली रोशनी
वसुधा में जल गई
वो नीली रोशनी
अंबर को छू गई
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

ये रात दिवाली
मतवाली
होती वो बावली
खुशियों की रोशनी।
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

रोशन ये रात है
खुशियों की रोशनी
चंदा की रोशनी
सूरज की रोशनी
निशा ने ओढ़ ली
धानी चुनकर नई
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

जो हो सके तुम भी
मन का वैर जला दो
आक्रोश मिटा लो
संताप जला दो
जो हो सके तुम भी
एक दीप जला लो
यह रात दिवाली

खुशियों की रोशनी
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

हर घर में रोशनी
ऐसा भी कुछ करो
सदियों से अंधेरा
कुछ ऐसा जहाँ है
शिक्षा की रोशनी
मोहब्बत की रोशनी
एक गीत बना लो
दिया की रोशनी
ना कोई दुख सहे
भूखा नहीं रहे
धरती में स्वर्ग हो
शिक्षित जगत बने
कुछ ऐसी रोशनी
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

रंगोली सजा लो
मन में उतार लो
जीवन को दिशा दो
गंगा में प्यार हो
यमुना में प्यार हो
भारत की रोशनी
पूरे जग में रोशनी
हर दिल में रोशनी
मानव की रोशनी
अंधेरा दानव है
उसको मिटाएंगे
चहुँ और रोशनी
चहुँ और रोशनी

76.ऐ बसंती हवा

ऐ बसंती हवा, तू है चंचल
चंचली नाम तेरा रखुँ मैं
चंचली नाम तेरा रखुँ मैं
है सलोनी बड़ी मनचली तू
मन के संग संग चली तू चली है
मन के संग संग चली तू चली है
हाँ मैं बदला था बदरी को ढूंढे
तू तो कारी धनेरी धनेरी
तू तो कारी धनेरी धनेरी
बात मन की जो कहना सकूँगा
तुम जो चाहो तो मन ही से सुनना
तुम जो चाहो तो मन ही से सुनना।

उम्र मेरी नहीं अब बची है
पाँव उठते नहीं अब जमीं से
पाँव उठते नहीं अब जमीं से
तेरी उलफत की शौखी अदाएँ
दूर जाने को कहती फिजाँ से
दूर जाने को कहती फिजाँ से
जब तेरा घर बहुत दूर है फिर
राह ऐसी और इतनी सरल क्यों
राह ऐसी और इतनी सरल क्यों

आओ अब दूर तक भी चलेंगे
दर्द मय कश भरी जाम लेंगे
दर्द मय कश भरी जाम लेंगे

तू है भोली नवेली सनम सी
तुम मोहब्बत की गगरी सुनहरी
तुम मोहब्बत की गगरी सुनहरी

आओ अब दूर जाना नहीं है
पा लिया है तो खोना नहीं है
पा लिया है तो खोना नहीं है

जब तक सांस आती रहेगी
मैं तेरा यार बना कर रहूँगा
मैं तेरा यार बना कर रहूँगा

सुर्ख आँखों में सागर समाकर
बाँझ धरती को अब हम सजाएँ
बाँझ धरती को अब हम सजाएँ

तेरी मंजिल मेरा घर बना है
मेरे मन को तु मंजिल बनाले।

करवाँ भी सजेगा,फेहरिस्त भी बढ़गी
आशिकों की लंबी कड़ी में
एक तेरा, एक मेरा नाम होगा।

हाँ कहीं दर्द बाकी अभी भी
दर्द–ए–दिल में मोहब्बत भी
बाकी
दर्द–ए–दिल में मोहब्बत भी
बाकी

ऐ खुदा अब मुकम्मल करो तुम
दिल में चाहत अभी भी है बाकी
दिल में चाहत अभी भी है बाकी

तुम तो जाती,तो कहती हो आना
मैं तो जाकर भी कहता हूँ आना
मैं तो जाकर भी कहता हूँ आना

जाना लौट आना सनम तुम घड़ी से
आँख टिकी रहेगी घड़ी पे
आँख टिकी रहेगी घड़ी पे

दिन को गिरने की हिम्मत ना
होती
कोई सुध भी नहीं तारीखों की
कोई सुध भी नहीं तारीखों की

काट दो ये कैलेंडर की छुट्टी
काम के सारे घंटे बढ़ा दो
काम के सारे घंटे बढ़ा दो

दिल से रूख्सत कभी ना कहूँगा
याद में तेरी हँसता रहूँगा
याद में तेरी हँसता रहूँगा

माना तुम भी तुम्हारी नही हो
अपनी हालत भी खुद सी नहीं है
अपनी हालत भी खुद सी नहीं है

तुम जो चाहो ना चाहे किसी को
वश में दिल भी किसी का नहीं
वश में दिल भी किसी का नहीं।

77.हमने सुना है–

हमने सुना है
तुम भी अपनी
गौरी हथेली पर
काली वाली मेहंदी से
किसी का नाम लिखती हो
और छुपा भी लेती हो।

नाम मेरा ही हो
यह मुक्तलिफ नहीं
पर उम्मीद मेरी है
तेरी नफासत भी मेरी है
और अमानत भी मेरी है।

सब लोग जानते हैं
कि तू मेरी है
पर यकीं मुझे क्यों नहीं
क्योंकि तेरी खुशबू बस इत्र वाली है
मेरी वाली तो हवा हो गई।

मैं अपनी अदा का रंग जानता हूँ
शायद उसमें थोड़ा लाल थोड़ा
हरा
और हल्का सा सादाई है।
कत्थई मिला आसमानी है
थोड़ा गहरा नीला और थोड़ा सा
काला है।

78.आज तलक कविता को में

आज तलक कविता को मैं
पुस्तक में ढूंढा करता था
देखा तुझको, मन बदल गया
तुमको ही 'कविता' लिख डाला
तेरा नाम कविता रख डाला।
जो गलियों में घूमा करती हो
फूलों को चुम्मा करती हो
नई अदा से सुबह शाम तलक
बस नया प्यार दिखलाता हो।

आज तलक कविता को मैं
बुद्धि से लिखा करता था
देखा तुझको, मन बदल गया
और दिल से कविता लिख डाला
तेरा नाम कविता रख डाला।
जो सागर से भी गहरी है, हो
सारे पर्वत से ऊंची है, हो
धरती के आँचल में ना बँधी
सूरज की किरणें छु ना सके
सूरत जो तुम्हारा दिख जाए
तब नया प्यार दिखलाती हो।

निश दिन गावत–सेवत कविता
अंधरों से मैं गा लेता।
कण्ठों से सुर को सजा लेता
देखा तुमको मन बदल गया
तेरा नाम कविता रख डाला।
जो हृदय के अंतः पुरम् में
धड़कन बनकर जो धड़कती हो
जहाँबीज सृष्टि का पलता हो
हाँ गर्व प्रेम करता हो
नित् नई उषा का जनम जहाँ

नवजीवन लेकर आता हो
तब तुम ही तुम दिख जाती हो
और नया प्यार दिखलाती हो।

तुम अपनी हो, तेरा नाम यही
वन उपवन ढुढ़ा करता था
नए शब्द सजा लिख लेता था
तब तेरी हँसती सी आँखों ने
दिल के सारे पट खोल दिए
मैं खुशियाँ भर भर रोता रहा,
तु अश्रु जल से स्नित्ध–स्नान
नित् सज–धज आती जाती रही
रहतीचुप्पी होठों पे है
हृदय मौन है शिथिल पड़ा
ऐसे में श्यामा देखा तुझे
तेरा नाम कविता रख डाला
जो अंत स्थल में वास करें
तुम मधुशाला की मधुबाला
जीवन में पुष्प वन माल लिए
पथ परआगे बढ़ जाती हो
जीवन के भीत सुनती है
जीवन के रीत सिखाते हो
दुनियाँ का बोध करा कर तूम
फिर नया प्यार दिखलाती है।

79.तुम सुनकर सम्मान लेना

तुम सुनकर समझ लेना
संदेश यह मेरा है
देवों के होठों पर
जो कुछ भी रख देना
राधिका दुलारी को
जब श्याम पुकारेंगे
तब तुम भी सुन लेना
संदेश ये मेरा है।

मुझे गर हो कुछ कहना
तुम श्याम चरणों में
एक फूल चढ़ा देना
बस एक देवता है
और तुम भी सुन लेना
संदेश ये मेरा है।

80.एक जाने कैसी आग

एक जाने कैसी आग
हरदम झूलसाती है
थी आग लगी मन में
तो अंतर जलता था
मैं झल्लाता रहता
मुझे चैन नहीं आती।

जब से तुझको देखा
शीतल होता तन मन
कुछ कह नहीं पाता हूँ
एक बड़ी हुई उलझन।

वंशी की ध्वनि फैली
विश्वास की जननी है
तुम भिन्न नहीं राधे
एक इधर आत्मा है
एक उधर आत्मा है
एक जनम तु जी लेना
एक जनम में जी लूँगा।
मैं तेरी आराधना
तू मेरी पूजा है।

ये प्रतीक मात्र जीवन
और प्रेम समंदर है
तन का चेतन भी नहीं
जब मन से मन मिलता
एक तेरी भावना है
एक मेरी भावना है
अदृश्य गीत सुनता
अशरीरी समर्पन है।

सावन की बूँदों से
घायल ये हवाएँ हैं
रतनारीकिरणें में
कैसर की साँसे है
कच्चे नैना बादल
होठों पर झुकते हैं
स्पर्श के बादल से
कचनार है नरमाई
एक गीत तुम्हारी है
एक गीत हमारी है।

81.चलो एक बार गुलशन को

चलो एक बार गुलशन को
गुले गुलजार कर आएँ
लगी जो झुर्रियाँ मुखड़े पे
उन्हें बे जार कर आएँ।

यही मौका मोहब्बत का
बना दस्तूर ऐसा है
वतन के हुक्मरानों को
राहे अमन बता आएँ।

कहीं शिक्षा का दीपक बजाने वाला है
कहीं मुफ्लीशी आलम है
कहा था उसने पिछली बार
गर्दिश में ना रहे कोई
आगाज़ करके देखा था
रहा अंजाम बाकी है
चलो फिर से, सजा ले हम
मुकद्दर आशियाने का।

चलो एक बार, गुलशन को
गुले गुलजार कर आएँ
लगी जो झुर्रियाँ मुखड़े पे
उन्हें बे जार कर आएँ।

ये वक्त फिर आया है
जमहूरियत वाली
ऐ सत्ता के शौकीन
तुम्हारा काम बाकी है
तुम हमसे बनते हो
एक से जानते हो
मंदिर मस्जिद की बातें भी पुरानी है
चाँद पे चढ़कर भी तिरंगा बोला है।
कश्मीर की सीमा पर
नई दीवार नहीं होगी,

उस पार की दुनियाँ भी
अपने लोगों की है
सच्चे झूठे के बीच
नईतार खींच आएँ।
भारत को भारत संघ
एक ध्वजा से बाँध आए
तीनों रंगों में फिर एक चक्र बना आएँ
एक बार गुलशन को
गुले गुलजार कर आए,
लगी जो झुर्रियाँ मुखड़े पे
उन्हें बे जार कर आएँ।

82.कुछ शब्दों में कह जाने से

कुछ शब्दों में कह जाने से
ज्यादा अच्छा चित्र बनाना
दिल से जो तस्वीर चिन्ह में
समझ सके हम एक दूजे को।
हाथ जोड़कर, चिन्ह बता दो
पता चला अभिवादन है
अंगूष्ठा का चित्र मिला तो
पता चला सब ठीक–ठाक है।

मन की जो बातें कहनी हो
प्रतिक चयन कर भेजो आगे
दिल का सुंदर चित्र भेज दी
पता चला के दिलवाली हो।

सुबह सवेरे सूरज भेजो
शाम को चंदा चित्र में भेजो
शब्द नहीं आकृति निकालो
सरल सुगमयह चित्र लिपि है।

83.कुछ मतलबी से लोग

कुछ मतलबी से लोग
एक साथ मिलकर,
काम करते हैं,
उसे संस्था सब कहते हैं।

किसी को चाहिए सम्मान
कई लोगों के हैं अरमान
किसी को खुद पे है अभिमान
उसे संस्था सब कहते हैं।

कई चापलूसी है करते
कई तो दिल में रहते हैं
कहीं के हैं बड़े आदर्श
किसी का नाम प्यारा है
इसे संस्था सब कहते हैं।

भला होता है कुछ–कुछ
जो पड़े बेकाम बड़े हैं
एहसान पर जीने की
जिसको है पड़ी आदत अनूठी है
वहीं से काम चलता है
इसे संस्था सब कहते हैं।

84.माँ तो अब भी अपने

माँ तो अब भी अपने
बच्चों को अपना ही हिस्सा (मान बेठी है) समझती है
मगर अब सब के सब
अपना अपना हिस्सा,
माँ से मांगते हैं।

माँ कहती कलेजे का टुकड़ा
मेरे दूध से बना तन है
मेरे रक्त धार से जीवन है
पर बच्चे अब मानव का रूप
लिए
कहते बेशर्म, मेरा हिस्सा दो
माँ के हिस्से में कुछ भी नहीं
बस अपना अपना हिस्सा दो
बाबूजी का सब कुछ
हम दोनों का है
तुम तो अब बूढी हो चुकी
तेरा क्या,
हम दोनों का है परिवार
अपना अपना हिस्सा दो।

85.बिक जाते समाजी नेता

बिक जाते समाजी नेता
पैसे और दो पैसों में
अपने के सपनों को
बेचते कोड़ी और दो कौड़ी में।

लोकतंत्र की बड़ी दुहाई
देते हैं कसमें खाकर
सुख–दुख में हम साथ रहेंगे
वादा करते जनता से।

रूप बनाते स्वांग सजाते
देशभक्त खुद कहलाते
स्वार्थ से पूरे लथपथ होते
ठगते भोली जनता को।

संसद का सपना देते वो
हक अधिकार दिलाएँगे
सबकी सुनते करते अपनी
सत्ता के गलियारों में।

पाँच साल में एक बार
दाता के आगे झुकना है
फिर सारी जनता को
कदमों में अपनी झुकानी है।

अगड़ी पिछड़ी का झांसा है
राम रहीम का मुद्दा है
फिर मत पूछो महँगाई
और रोजगार का वादा है।

घर बनकर तैयार रहेगा
अनाज मुफ्त मिल जाएगा
खाते में पैसे आएंगे
देश खुशहाल हो जाएगा।

पढ़ो पढ़ाई की बातें
अपने–अपने हद तक होगी
निर्धन को पढ़ने के खातिर
पाठशाला खुल जाएंगे।

पाठशाला और विद्यालय
ऊँचे ऊँचे लोगों की
जिनके मोटी शुल्क से
बनती मदिरालय की दीवारें।

बंद भले ही विद्यालय हो
मधुशाला चल जाने दो
खेतों में हल नहीं चल तो
अन्न विदेशी खाएँगे।

पिज्जा, बर्गर, चाइनीस खाना
बरतनी ब्रांड आभूषण हो
कोरिया की तकनीक लाएँगें
खिचड़ी खाओगे तुम लगे रहो।

राफेल बनेगा, फ्रांस देश में
गन्ना तुम उप जाओगे
बुलेट ट्रेन जापान से लाएँ
जनता एक्सप्रेस चलाते हो।
मत देना अधिकार सभी का
एकमत एकमत ना होना
एक–एक मत के तुम स्वामी
ले देकर तुम मत देना।

कहीं दिवाली रोज मनेगी
होली रोज मनाएँगे
लाल कार्ड तेरे भी बनेंगे
मत मत कर तुम ना देना

अब तो देखो अनुकंपा में
मत मत कर पड़ जाते हैं
पीढ़ी दर पीढ़ी तक
नेता, नेता ही रह जाते हैं।

नौकर ढूंढो व्यापार करो तुम
मेहनत मजदूरी तुम्हारी है
जनता देश के मालिक है
कहते हैं नेता सेवक है।

देश की सरहद और सीमा पर
निर्धन बच्चे जाते हैं
रोजगार पाने की खातिर
देश धर्म पर मिटतें हैं।

कहीं नहीं दिखते सरहद पर
नेताओं के पुत्र सुपुत्र
राजा के जो राजकुमार
वो रण में आगे रहते थे।

हाय, पृथ्वी पलट गई क्यों
अंबर क्यों उल्टा कर बैठा
नेताओं के पुत्र, सिंहासन
पर जाने क्यों हक रखते हैं।

माता जो हटी बात
पिता की आँखें पथराई है
रण में पुत्र, ग्राम में माता
देश धर्म पर मरती है।

कहता पिता वो देशभक्त है
दुश्मन से भीड़ जाता है
भारत माँ के शौर्य मान में
शीश कटा कर आता है।

नेता का जो पुत्र जनम से
अधिकारी शासन का है
वीर शहिद का पुत्र देश में
रोजगार का भूखा है।

हाय, विधाता देश धर्म में
क्यों सैनिक मरता रहता है
जहाँ देश के नेता धन को
दोनों हाथ लूटाता है।

बिक जाते हैं बिकने वाले
गद्दारों की फितरत है
देश के खातिर जीने वाले
देश पर ही मर जाते हैं।

86.आग लगे उस देश के

आग लगे उसे देश के
हाकीम और वजीर हक्कारे को
कहता है, वो अग्नि वीर है
नहीं शहीद कहलाएगा।

देश वही, सरहद भी वही
भारत माता का लाल है वो
कौन से जिंदा कहती हैं
वोखुन, देश का ना होगा।

जिस तिरंगा के खातिर
माँ ने हाँ अपना लाल गवाया है
एक विधवा बन पड़ी रो रही, कहता
नहीं, नहीं शहीद नहीं होगा।

निर्लज्जता की सीमा बांधकर
देश–विदेश वो फिरता है
कहता है वो अग्नि वीर है
वह शहीद नहीं कहलाएगा।

तेरी ही कानून तय करें
कौन देश का प्रेमी है
मर्जी तेरी करें फैसला
कौन देश का द्रोही है।

अंधकारों का पन्ना भी अब
पुछ तुझे ही छपता है
दूरदर्शन का समाचार भी
तेरा ही गुण गाता है।

मारे गए पत्रकार कई
नेता है कारागारों में
तेरी मर्जी के विरुद्ध
जो जाएगा वो
देशद्रोही कहलाएगा।

नहीं रहा लोकतंत्र देश में
शाही शासन आया है
एक धर्म और एक जात हो
यही सुशासन आया है।

87.रोज सुबह फिर एक बार

रोज सुबह फिर एक बार
सूरज का निकल आना
दुनिया के सबसे बड़ी घटना है,
चमत्कार है, प्रेरणा है,
उत्साह का आलिंगन है,
जीवन रेखा की दिशा को
प्रशस्त करता, एक क्षमता
जो विश्वास को स्थापित करता है।

परंतु सूर्यास्त की सुंदरता
अप्रतिम, के मनहारी है
यहाँ खोया विश्वास वापस
आने की उम्मीद होती है
कल फिर सूरज निकलेगा
इससे बड़ा कोई उत्साह नहीं
है।

सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच
काली रात होती है
परंतु जगत के जीवों को
शांति इस रजनी की गोद में
मिलती है, जो ऊर्जा प्रदायी है,

सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच
परिश्रमी दिन होता है, जो
उजाले के साथ–साथ
रात के सुकून को तय करता
है।

अतः उगते सूरज को प्रणाम
जरूर करना, पर मत भुलो
डूबता सूरज अगर अंधेरा
का जाता है तो फिर वापस
वही सूरज प्रकाश पूंज
बिखेरता, सृष्टि को ऊर्जावान

बनाता वापस आता है।
झुकों प्रणाम करो,
पूजन करो, अर्चन करो
डूबते सूरज को नमन करो
कि कल उगते सूरज को भी
प्रणाम कर सको।

88.भक्ति के दो पंथ

कहा भक्ति के दो पंथ
निर्गुण और सगुन
एक निराकार इश्वर
सगुन का आकार इश्वर

जो धरा पर है तेरे
पूर्वज पिता माता व अग्रज
है सगुन, भक्ति वही है
पूज कर तृप्ति मिलेगी।

दूर है अब ना रहे संग
वही निर्गुण ब्रह्म है
आकर धरती पर नहीं
कर लो अर्पण भक्ति
सुख मिल सकेगा
आत्मा को तृप्ति
शायद मिल सकेगी।

89.एक पत्थर फिर उठा लूँ

एक पत्थर फिर उठा लूँ
रास्ता थोड़ी खुलेगी
बस इसी उम्मीद पर
हाथों में छाले पड़ गए।

कुछ कदम जो चल सकूँ तो
मंजिलें नजदीक होगी
बस इसी उम्मीद पर
पाँवों में छाले पड़ गए।

जो थका महसूस की
तो सुस्त होकर गिर पड़ा
आखिरी दम तक प्यासे
होठों में पाले पड़ गए।

नर्म आहत जिंदगी की
एक तरफ आती रही
बस इसी उम्मीद पर
साँसों के सरगम चल पड़े।

90.पिता का मरहमी अंदाज

पिता का मरहमी अंदाज
जिस्म के छालों को ठंडक
या कि जीवन के दर्द को बाँटता
एहसास होता आज।

थोड़ी सी जलन शुरुआत की
बर्दाश्त कर लेता अगर
तो घाव ना नासुर होता
बन गया होता, तभी सरताज।

हाँ पिता पेड़ों की ठंडी छाव
परिवार के खातिर, ना रुकते पाँव
जगत दुख एक तरफ
श्रम की व्रतीजो यों चले ज्यों नाव।

पिता एक युग है, जीवन का है
महाकाल बेखौफ और बेसुध,
मोहब्बत भी है बेहाल फिक्र है
तो पिता है,
गर खुशी भी है मिली
वरदान भी है, पिता की है।

91.एक किस्सा फिर बना

एक किस्सा फिर बना,
तेरे फसाने से
आधा हमने लिख लिया
तेरे मुस्कुराने से।

बदहवासी का असर होता नहीं
इश्के समंदर में
एक जर्रा जिंदगी, बनती गई
राहे खुदा दरबार में।

ना लिखा हमने कहीं
हुश्ने वफा का नाम
क्यों हवा को भी खबर
है इश्क का पैगाम।

अब तो हमने सोच रखा
ना खुदा से हो शिकायत
ना दुआ फरियाद हो
इश्क के तासीर होगी
तो मोहब्बत पीर होगी।

लोग आशिक कह रहे
राहे मोहब्बत दार को
आज भी जिंदा फकीरी
इश्क के दरबार को।

92.सकल गुणों का खान

सकल गुणों का खान राम है
प्रतिस्थापित नाम राम है
भुजबल का अभिमान राम है
अध्यात्म सकल गुण धाम राम है।

राम जगत और स्वर्ग राम है
'क' आरंभ विसर्ग राम है
वही मध्य और अंतराम है
दुर्वा से गंगाजल कहता
राम–राम है।

राम परिस्कृत निर्बाध राम है
जाति कुल संग्राम राम है
रघुकुल का अभिमान राम है
ब्रह्मा योद्धा महा राम है।

जब ज्ञान युद्ध करने आवे
कोई अस्त्र काम नहीं आता है
अध्यात्म समर जब भी ठाने
छल बल परास्त हो जाता है।

माया का अपरंपार राम है
शिव का बारंबार राम है
विष्णु का अवतार राम है
माधव का पूरा नाम राम है।

महिमा का पारावार नहीं
है एक रूप, गुण अपरंपार
है राम एक, रामत्व अनेक
है एक नाम, केवल है राम।

विष भर डाला है भक्तों ने
बस अपनी–अपनी करनी की
महिमा, गरिमा धूमिल की है
जो अखंड विश्व स्वामी है राम।

कोई क्या करूणा गान करें
वो स्वयं करूणा का सागर है
वेद वेदांत गीता उपदेश
वोसकल ग्रंथ का गागर है।

मत कहना राम हमारा था
क्योंकि जब राम धरा पर थे
कोई रंग नहीं थी धरती पर
बस राम ही सकल सहारा था।

करते विषगान, कहते गुणगान
तुम विश्व बंधु क्यों कर होंगे
राम की सबरी, राम का केवट
लिख लो कपाल, तब राम राम
है।

अंजनी पुत्र वो हनुमान तब
कहो सियापति राम राम
लक्ष्मण के उर्मिला महान
मांडवी भारत के तेजो महान
तब माता कौशल्या की
जब हो महान, तब राम राम
तब राम राम
जब मिला बंदरों का राजा
वो मानव युद्ध के पीछे थे
तब साथ मिला, प्रभु भक्ति मिली
तब प्रभु बने,
स्वयं स्वामी नहीं कोई होता।

हां भक्त मिले तो प्रभु बने
या प्रथम प्रभु तब भक्ति मिले
दोनों ही निजता का प्रमाण
प्रकृति मेल जब खाता है
जननी जनक सूता बनकर
भूमि से भूमिजा जनमती है
तब सियाराम बन जाता है
और राम–राम कहलाता है।

बल था प्रचंड, रावण स्वामी
वो तीनों लोक विजेता था
वोशिव का भक्त,भूलोक विजेता
निर्भय था, वो ज्ञानी था।

झूक कर विनय नहीं करता
मुझे यम क्या लेकर जाएगा
ले जाना मुझे जो धरती से
वो विष्णु धरती पर आएँगे
तब राम बना, एक नाम बना
छल बल का तारणहार बना
कहीं राम–राम कहलाता है।
वही राम नाम कहलाता है।

93.तस्वीर बनाने वाले ने

तस्वीर बनाने वाले ने
रंगों से सजाया है
सूरत के मुताबिक रंग
बड़े मन से लगाया है।

तस्वीर बनानी थी
तकदीर नहीं लिखनी
पर देखने वालों ने
जाने क्या–क्या देखा है।

काला अशुभ, पीला महान
हर दुश्मन, नीला विहान
रंगों को जाने क्यों
एक एक से जोड़ा है।

खुद रंग सुनहरी है,
चाँदी चमकीली है
एक माँ को प्यारी है,
एक अम्मी के नुमाइश है।

ऋतुओं के बदलने में
कोई बात नहीं ऐसी
पर मुद्दत से बात चली
उलझन ने बनाया है।

94.सावन के गीत

सावन का गीत, मेरा मन मीत
क्यों ऐसा लगता है,
बंशी में बजा संगीत
सखियाँ के शौख–शरारत में
बलमा की याद सताती है।
पथ हरियाली नदियाँ कल कल
पायल झुनझुन कहे पिया पिया
बादल काले, जल बरसा दे
मेरे साजन आने वाले हैं।

घनघौर घटा,पुरब से चली
मानों प्रीतम के चिट्ठी है
वो चला आ रहा, प्रेम के रथ पर
तेज हवा के झोंके सा
पीपल, बरगद,अमुवा, जामुन
सब उसकी याद सताती है,
बरसो बरखा मन मोर बने
मेरे बालम आने वाले हैं।

वो ऐसा ही कुछ,
कह कर गए
जब घोर बदरिया छाएगी
बागा में कोयल जाएगी
मैं आऊँगा तुमसे मिलने
बिजली से चमक कर तुम आना
बादल सा गरज में आऊँगा।

सावन के सुहाने मौसम में
सजनी संग मिलने आऊँगा
जनमों के प्यास मिटाऊँगा।
मैं तुमसे मिलने आऊँगा
रूत मौसम सब कुछ ऐसा है
सावन के अंधेरी रात भी है
वो बालम मेरा आएगा
प्रदेश छोड़कर आएगा
हाँ साजन मेरा आएगा
श्रृंगार मेरा बन जाएगा।

95.यश मान सम्मान

यश मान सम्मान
कोई अपना नहीं है
उदार हो कि अभिमान
कोई अपना नहीं है।

कोई अपना नहीं है
दौलत के सिवा
जो तुम दौलतमंद हो
तो फिर अपने भी
अपने और पराए
अपनों से भी अपने।

शिकायत क्यों करें कोई
जो अपना है नहीं कोई
जो अपना सा कहीं कोई
शिकायत क्यों करे कोई।

जो हम तुम साथ होते थे
बड़ी तकलीफ होती थी
जुदा चल हम भी रहते हैं
जुदा चल तुम भी रहते हो
अब ऐसी बात ना कोई
शिकायत क्यों करें कोई।

मेरा घर था वतन मेरा
वतन साँसों में रहता था
सदा महफूज रखने के
कसम वादे मैं रखता था
मगर कीमत चुकाने को
इमानें बिकती रहती है
शिकायत क्यों करें कोई।

मिट्टी में वतन के खुशबू
बड़ी शुकून लगती थी
किसी मासूम के घर में
दिया धीमी सी जलती थी
मगर अफसोस देखो तो
फलक तक रोशनी दिखती
कहीं रातें अंधेरी थी।

जुवां पर नाम लेकर
खुदा से पूछतीअम्मी
जमीं जो बँट गई सारी
जिंदगी क्यों नहीं बाँटी
दीवारें बन गई ऊँची
तो छत भी क्यों नहीं बाँटी
जन्नत बँट गई सारी
तो अंबर, क्यों नहीं बाँटी।

जो खुशियों में लिखा है नाम
कहते अल्लाह लिखते हैं
कहीं मायूस लिखते हैं
कहीं दौलत बख्सते हैं
कहीं इंसाफ लिखते हैं
कहीं आजाब लिखते हैं
तुम्हें सब पाक कहते हैं
कहा सब तुमसे डरते हैं।

ये दुनिया हुक्म रानी है
तेरी नूरे दीवानी है
तेरे फरमान न जाने
कोई क्या लिख लिखा लेता
तेरा बस दस्तखत बाकी
कोई तुझसे करा लेता।

रही कुछ पैरवी रहती
कहीं कुछ अजादारी
मुकम्मल झूठ ना रहती
पूरा सच भी नहीं रहती
कागज में छपे अल्फाज
झूठे हो नहीं सकते
यही दस्तूर कहती है
खुदा के घर में चारों ओर
कितनी कारखानी है।

96.कहे क्या वेद के ज्ञानी

कहे क्या वेद के ज्ञानी
हमारा देश अभिमानी
चलो इस देश के आगे
धरम की राजधानी है।

जीत नहीं कोई
कहे यह वेद की वाणी
ब्राह्मण,ब्राह्त का ज्ञानी
नहीं यह जात पुश्तैनी।

कहा साधु फकीरों ने
कहीं जाति ना पाँति हैं
अगर तुम ब्रहत के ज्ञानी
हक तुमको की अभिमानी।

शुन्य कालम् यथा मानम्
ब्रह्त ही केवल जगत था
आचरण, विचार, शरणम्
बँट गए, बँटते गए
और वर्ण के आश्रम बने।

जीवन चली, दुनियाँ चली
पेशा के पेशाकार बने
जीवन साधना के नए संगीत
बनकर घर सजे आँगन बने
फिर गाँव बनाकर के चली।

हाँ जरूरत की तरह
हर चीज बनते ही रही
कुछ बने भोगी
भोग करने के लिए
कुछ बने ढोंगी
ठगी करने लगे
पर कर्म योगी हाथ
मेहनत कर्म करने के लिए
तत्पर रहे सब के लिए

तो नीचे बन गए
जो करेगा काम,
नीचे के आश्रम में रहेगा।

जो करेगा विश्राम
ब्राह्मण वो बनेगा
व्यवस्था की रीढ़ में
जो तय करेगा वही
पिछड़ा वर्ग होगा
सब के सब को स्वच्छता
का पाठ देगा
शुद्र जीवन वह धरेगा।

वंचित करो शिक्षा से उसको
धन नहीं अधिकार उसका
मानवता के वृत्त में उसका
प्रवेश नहीं निर्धारित हो
तभी करेगा कर्म निकृष्ठ
हो यही हो धर्म उसका।

काट लो जि हाँ, जो बोले
काट लो अंगूष्ठा जो खोले
निज सराशन वाण के
ले लो कवच कुंडल जो
कोई कर्ण हो, तुम सूत हो
बनकर रहो अवसान
यही है मनु का विधान
धर्म संगत जो संविधान
कर लो धर्म का गुणगान
कर लो कर्म का अपमान
कर लो कम का अपमान।

97.यदि प्रथम पुज्य धरती माता

यदि प्रथम पूज्य धरती माता
तब दुर्योधन क्यों स्वीकार नहीं
यदि राजधर्म हो सर्वोपरि, फिर
धृतराष्ट्र क्यों स्वीकार नहीं।

राजधर्म तभी माना
जब धर्मराज राजा होगा
हित् राज प्रजा का खंडित हो
परवाह नहीं कुछ पड़ता है
बस धर्म मूल निबंधित हो
मानव वसुधा प्रतिबंधित हो

फिर सकल जगत कल्याण की शिक्षा
वेदों से क्यों उत्तर आयी
क्यों कुरुक्षेत्र की गाथा में
कुरु रक्त ही धर्म को ललचायी।

विश्वासी ने नहीं घात किया
जो कर्णद्रोह न कर पाया
तो नयी कहानी गढ़ आया
फिर आरोप गठित उस वंचित
पर
शोणित का कारण मथ आया।

98.ऐ रिश्तेदार

ऐ रिश्तेदार,
मैंने तुम्हें अपना समझा
भूल हुई और देर हुई
क्योंकि रिश्ता नाता
प्यार, वफ़ा सब बातें हैं
और मैं बात पर
भरोसा कर लिया
ना समझी, थी मेरी कि
मैंनें तुम्हें अपना समझा।

ए दोस्त,
मैंने तुम्हें अपना समझा
तेरी दोस्ती, वो मददगारी
चौक, चौराहा, गली मोहल्ला,
मिला हो, अकेला
तेरा नाम लिया, तुझे साथ देकर
तेरा साथ लिया
और मैंनें दोस्ती पर
भरोसा कर लिया।

हर एक मुलाकात के बाद
आमंत्रण करते आइएगा
स्थिति,परिस्थिति, नियोजन
अवकाश, परिधि, संयोग
सब देखकर भी जब
आने की सूचना आती है
तो फिर हलचल दहशत
अफरा–तफरी, रंगाई, सजाई
धुलाई पुवाई में गति तीव्रता
एक असहजता अक्सर
देखने लगती है

ऐसे कुटुंब जनों को निज
सुख–दुख अवस्था व्यवस्था
का इजहार करना
अपना अस्तित्व को गिराना
मिटाना और जलाना होता है
फिर भी मैं नए पुराने
दोस्तों रिश्तेदारों को
आज भी अपनी लड़ाई में
लपेटना चाहता हूँ
थोड़ा ढील देकर, फिर
धागा बढ़ाकर
जीवन के पतंग को
ऊंचे आसमान में उड़ाना चाहता
हूँ।

99.शिक्षा दीक्षा ज्ञान–चेतना

शिक्षा दीक्षा ज्ञान चेतना
दान ग्रहण के तंत्र में है
दानी का संबल अपेक्षित
याचक में प्रबल अनुयायी है।

गुण भी हो, गुणवत्ता भी
यह राष्ट्र निधि परियाचक है
मानक हो सरलता भी
अटल जटिल सच्चाई है।

परिवर्तन है गुण श्रेष्ठ
युग पथ पर होता अविराम
सत्यान्वेषण और निरंतर
श्रेष्ठ शिक्षा बलदायी है।

मन हृदय की मान चेतना
विज्ञापित भानु प्रज्वल है
शीतल चंदा, सुप्त वसुधा
शिक्षा युग जीवनदायी है।

100. खुदा के दरबार में

खुदा के दरबार में
सुना है हिसाब है
अरे छोटी बड़ी गुनाह
लिखे जाते हैं।

फैसले में कहीं भी
बर्दाश्तगी नहीं है
बस न्याय होती है
तस्वीर नहीं होती है।

फिर यह कैसा खेल है
चीजों का हिसाब क्यों नहीं है
किसी ने बटोर रखी है
कोई कंगाल बैठा है

सुना है कर्मों का हिसाब है
पर दिखाता कुछ और ही है
कर्म का हिसाब होता है
सुकर्म और कुकर्म बेहिसाब होता
है।

अगर दौलत आई
तो फिर रास्ते से क्या लेना
इमान के आने जाने से
सोहरत का क्या लेना।

जनाब इज्जत दौलत की
गुलाम होकर रहती
क्योंकि दौलत की कीमत है
इज्जत की कोई कीमत नहीं
होती।

ये झोपड़े, ये महल
प्रतिपल बदलते
शहरी नजारे
कहीं भूख है
कहीं अन्न से भरे कूड़ेदान।

महज जिंदगी हर जगह है
इतनी सी हिसाब दरबारी है
खुदा भी है, लोग भी है
बस जिंदगी थोड़ी अलग–अलग
सी है

जिंदगी के सवारी की
एक किनारा जन्म है
एक मौत का किनारा है
इनमें से कुछ भी तय नहीं होती।

वतन है वतन परस्ती भी है
ईमान है ईमानदारी भी है
पर इंसान में इंसानियत होगी
या खुदाई हो मगर
दुनियादारी नहीं होती।

101. देख ली दुनियाँ

देख ली दुनियाँ
सहन कर, जी लगाकर
जिंदगी जी ली
मगर अब शौख
बाकी ना रही
वापस आ जाऊँ
कि जी भरने लगा है
माँ के ममता से भरे
आंचल में फिर से
लौट जाना चाहता हूँ।

हाँ, माँ हमने देख ली
चंदा चकोरे, महल और
दौलत की दुनियाँ
ना मिला अपना कोई
बस भीड़ थी, और मैं अकेला।
थाम लो उँगली, मुझे
आँचल में ले लो।

थक गया लल्ला तुम्हारा
गोद में कह दो पिता को
अब उठा ले, ये तेरा प्यारा
सा बच्चा, थक गया है
थक गया है।

जिंदगी बोझिल सी लगती
पाँव दुखते हैं हमारे
सुख के मेले में भटकता
प्यार के सौदा मैं करता
गिर पड़ा मुन्ना तुम्हारा।

बोझ ले ली थी अकेले
सबको सुख दिलवा ही दूंगा
सबने अपनी राह ले ली
मैं अकेला ही पड़ा हूँ
राह सुनी सी पड़ी है।

देखली दुनियाँ, सहन कर जी
लगाकर, जिंदगी जी ली
मगर अब शौख
बाकी ना रही
वापस आ जाऊँ
कि जी भरने लगा है
माँ की ममता से भरे
आंचल में फिर से
लौट जाना चाहता हूँ।

102. इधर कुछ दिनों से

इधर कुछ दिनों से
जिंदगी गाने लगी है
मुझ में इश्क बाकी है
यह सोंच कर शर्माने लगी है।

यह तो रश्म भी नहीं
ऐसा कोई दस्तूर भी नहीं
क्यों एकदम से जिंदगी
हँसने लगी है
ना सोचा, ना समझा
वक्त बे वक्त जिंदगी चलने लगी
है।

हमसे तो वादा था उसका
ना कदम आगे ना पीछे करेगी
उम्र भर हम कदम होगी
ऐसे ही कुछ बात की थी
मगर क्यों जिंदगी कभी साथ
कभी आगे, तो कभी पीछे चलने लगी है।

अब तो भरमा–सा गया हूँ
जिंदगी बदलती है, मोड़ लेती है
या आगे बढ़कर पीछे लौटती है
ये जिंदगी मेरी पुरानी वाली है
या नयी बनकर आई है
क्योंकि कभी मेरे, कभी उसके
कभी तेरी, कभी मेरी बनने लगी
है।

103. बड़ी बोझ से चलता जीवन

बड़ी बोझ से चलता जीवन
सफर इसे ही कहते हैं
सफर तराने, सफर में गाने
अक्सर गाए जाते हैं।

किसमें दर्द छुपा रहता है
कहाँ पे खुशियाँ होती है
राग द्वंद और अनुतान से
नहीं पता कर पाते हैं।

अग्नि है तो उष्ण ही हो
जल है तो शीतल ही हो
बस ऐसा वैसा लगता है
पर हृदय वेदना इतर बताए जाते हैं।

गुलाब और पलाश, दोनों फूल है
एक महकता है, महुआ भी है
है कितने अलग एक दूजे से
पर देखो सबको फुल बताए
जाते हैं।

104. मेरा जग मरेगा

मेरा जग मरेगा,
तब भी, मैं ना मरूँगा
दोस्तों रोने की तैयारी करते रहो
सच्ची वाली मौत अभी ना मरूँगा।

यों तो हर रोज,
कई बार मरता हूँ
नौकरी के लिए
मन को मारता हूँ
तुम्हारे इसके और
उसके लिए मन को मार कर
कई बार मरता हूँ।

पर सच्ची मौत अभी ना मरूँगा
अब जिंदगी ही झूठी हो
मरने के इंतजार में
कई मित्र शत्रु हो
कई अपने पराए भी हो तो
हर बार मरता हूँ
पर सच्ची मौत अभी ना मरूँगा
मेरा जग मरेगा, तब भी मैं ना मरूँगा।

105. जन्मदिन मुबारक हो

ये दीप अमर है
संसार समर है
वीरों का वीर है
यारों का यार है।

दीपक की जयंती का कभी
निर्वाण नहीं है
वह अग्नि द्वीप है
वो शक्तिपुंज है।

रत्ना के संग है
दीवा न मगर है
वो भँवरा बड़ा है
वृंतो में रहता है।

वो अमरदीप है
वह अग्नि शिखा है
जलता है बार–बार
प्रकाश के लिए।

वो दीप्तमान हो
सुरज से भी ज्यादा
वो दीप शिखा हो,
सौ जन्म से ज्यादा।

106. मैं समझता हूँ

मैं समझता हूँ
आप मुझे समझाना चाहते हो
कि आप समझदार हो
जो मैं बहुत पहले समझा हूँ।

आपसे कुछ सिखना
जरूर चाहता हूँ
जानना चाहता हूँ
समझदारों की समझदारी
मगर नासमझी है मेरी
जो मैं समझ जाता हूँ।

वक्त है सफर भी है
पर हर वक्त नहीं
एक पल जो छीनना
चाहा सुकून के
पर कोई क्यों समझे
छिनते पल कोई क्यों लुटाए।

अपनों का होना
साथ हो या ना
हो बस एहसास जानता है
तभी तो साथी और
तलाश जिंदगी भर चलता
समझ नहीं पाता।

कभी–कभी मन
किसी किसी से
जाने क्यों कुछ
कहना चाहता है।

पता नहीं पर अब भी
मन क्यों कहना चाहता है
मेरे से पहले मेरे मन को
चुप होना पड़ेगा
बिन कहे जीना पड़ेगा।

मन तो मन है
बिल्कुल चंचल
पहले जैसा अब भी वैसा
पर दस्तूर नहीं है ऐसा
सूरत जब बदले तो
सीरत बदल जाने की रश्म है।

पहले बच्चा था,कहते सब
मन का सच्चा था
पला बढ़ा जीवन में चढ़ा
डाली डाली सब कहने लगी
मन बढ़ने लगा,
हँसता क्यों है, रोता क्यों है
मन ही मन से लड़ने लगा।

और बढ़ी जवानी, बिखर गई
सब तार खुला ढीला सा बदन
मन, मन ही मन में रहने लगा
हँसना, रोना सब भूल गया
मन ही मन, सब बना खेल
जाने कब कैसे उजड़ने लगा।

107. भारत है एक देश

''भारत'' है एक देश
देश की सोच है ''भारत''
भारत नहीं है नाम
एक संस्कृति है 'भारत'

गंगा है सरिता की देवी
देवी की एक रीत है, भारत
गंगा नहीं है नाम
एक तहजीब है गंगा।

पर्वत बड़ा विशाल
नगपति के सामान
अपना हिम पर्वत विशाल
वो देश भारत है
पूरे राष्ट्र का गर्व और वह अभिमान है।
गांधी हो, नेहरू हो,
टैगोर या अंबेडकर
नाम नहीं ये महानाम
लिखता है भारत।

भारत है अपने रक्त में
बहती सरिता के समान
यह नदियों की धार में
पलता, सोंच रहता ''भारत'' है

हम रहते भारत में
भारत रहता है हममें
यह भौगोलिक आकृति नहीं
एक धर्म है भारत
जब भाई को भाई हृदय से
राम–राम कह जाता है
राम अंजनी लाल को
भरत सम कह जाता है
तब भारत, भारत बनता है।

जब माँ सबरी के बैर
जगतपति चखता है
मल्लाह कृतज्ञ बन जाता है
जब रामनाव पर आता है
तब भारत, भारत बन जाता है।

कृष्णार्जुन की मित्रता अनूठी
महाभारत बन आती है
तब देवकीनंदन होकर
नंददुलार कहलाता है
राधा का प्रेम, कृष्ण सखा जब पाता है
तब भारत भारत बन जाता है।

जब कर्ण कहता
दुर्योधन से अनीति हो या नीति
कहो
हम साथ ना तेरा छोड़ेंगे
जा माता पाँच पांडव तेरे
पाँचों ही पाँच रह जाएँगे।
गीता का कृष्ण, अर्जुन को जब

दिव्यांश दृष्टि करवाता है
तब भारत, भारत बन जाता है।

वो सठ कृषक
बुटा लिए जब बैलों को
खेत पर हाँके हैं
और रघुकुल रीत
सदा चली आई
प्राण जाए पर वचन
न जाए जब गाता है
तब भारत भारत बन जाता है।

नरेंद्र दत्त वो विवेकानंद
जब विश्व धर्म सम्मेलन
में जीने की राह बताता है
जब चकित विश्व प्रणाम करें
तब भारत भारत बन जाता है।

जब सुभाष, हिटलर से मिलकर
भारत की बात बताता है
और देश भरा एक सोंच

जगत को फिर बतलाकर आता है
तब भारत भारत बन जाता है।

गोपाल, तिलक, नेहरू, बल्लभ
सुभाष, जब राजा राम बन जाता
है
टीपू हैदर वो हेमचंद्र, राजा
पौरष
फिर चंद्रगुप्त, कौटिल्य महान
जब बनता है, जग कहता है
तब भारत भारत बन जाता है।

यूनान मिटा, फिर मिश्र मिटा
यूरोप की सत्ता खाक हुई
बेबीलोन इतिहास मिट चला
तब कृपा सिंधु बन जाता है
तब भारत भारत बन जाता है।

गांधी की है कर्म–स्थली
विश्व भर एक सोच है गांधी
अमित छाप है सत्य अहिंसा
प्रपंच हार जब जाता है
दुनियाँ की ताकत समेट
गांधी से लड़ने आता है
बिना खड़ग और ढाल हाथ के
पानी पीकर जाता है
तब भारत भारत बन जाता है।

मरता कैदी, सहता भारत
कर देता है भारत का किसान
जब गांधी गांधी कहता है
एक तरफ भगत और खुदीराम
सुखदेव मरकर भी अमर हो जाता है
तब भारत भारत बन जाता है।

जब दिया विश्व को अनुदान
तुम स्वच्छ रहो और स्वस्थ रहो
जब साथ ना दे कोई तेरा
तु एक अकेला चलता चल
संगठित रहो, शिक्षित भी बनो
संघर्ष तू अपना करता जा
तुम खून हमें दे दो

हम आजादी लाकर माँ को दे
देंगे
करो देश के लिए नहीं तो
मर जाना तुम बेहतर समझो
दुश्मन तुम अब छोड़ो भारत
सविनय यह स्वीकार करो
नहीं सहेंगे सुख तेरा, होगा
नहीं हमसे सहयोग।
बहिष्कार करो उसके भोजन
तुम कपड़ों का भी त्याग करो
हिंसा से मरेंगे लाल बने
देश रत्न कहला जाएँ
कारावास जब घर बन जाए
बेड़ियाँ गहना बन जाए
स्वीकार नहीं मोटर गाड़ी
हम बैल सवारी कर लेंगे
सिद्धार्थ यहाँ जब बुद्ध बने
और ज्ञान सुधा बरसाता है
तब फिर देखो समझो, दुनियाँ
भारत भारत बन जाता है।